स्मृति को प्रणाम!

बाबू रघुवीर नारायण

(स्मारिका-2000)

संपादक

डॉ० रामशोभित प्रसाद सिंह

स्मृति को प्रणाम!

बाबू रघुवीर नारायण

(स्मारिका-2000)

संपादक

डॉ० रामशोभित प्रसाद सिंह

पाण्डेय कपिल ग्रंथ-संग्रह
मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-800024

प्रकाशक

रघुवीर नारायण सेवा संस्थान

ग्राम+पो०- नयागाँव, जिला-सारण (बिहार)

www.bhojpurisahityangan.com

विषय-सूची

सम्पादकीय	डॉ० रामशोभित प्रसाद सिंह	3
बटोहिया	रघुवीर नारायण	4
रघुवीर नारायण के यशस्वी कुल-परिवार	पाण्डेय कपिल	6
प्रेम के कवि: रघुवीर नारायण	नागेन्द्र प्रसाद सिंह	8
'बटोहिया' के अमर गायक बाबू रघुवीर नारायण	निशान्तकेतु	10
बाबू रघुवीर नारायण और 'बटोहिया'	विश्वनाथ सिंह 'अधिवक्ता'	12
'बटोहिया' के अमर कवि बाबू रघुवीर नारायण	प्रताप नारायण	14
बाबू रघुवीर नारायण जी : संस्मरण	सत्यदेव प्रसाद चौरसिया	16
एक संस्मरण	श्यामदेव प्रसाद	17
बोले माटी सारन के	प्रो० बच्चू पांडेय	18
सारन की साहित्य-साधना में नयागाँव की भूमिका	डॉ० रामकिशोर प्र० श्रीवास्तव	24
इतिहास के पन्नों में नयागाँव	अशोक कश्यप	26
भोजपुरी के अमर कवि रघुवीर नारायण	जगदीश सिंह	29
प्रतिवेदन	प्रो० रामनाथ राय एवं जगदीश सिंह	30
गीत	सत्यनारायण सिंह	32

www.bhojpurisahityangan.com

संपादकीय....

भोजपुरी, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा और साहित्य को अपनी लेखनी और कृतियों से समृद्ध करनेवाले कविवर रघुवीर नारायण जी की 116 वीं वर्षगांठ के अवसर पर उनकी स्मृति में प्रस्तुत स्मारिका समर्पित करने हुए असीम हर्ष हो रहा है। इस स्मारिका का प्रकाशन विगत कई वर्षों अर्थाभाव के कारण लंबित रहा। किन्तु, यदि संकल्प पक्का हो, इरादे नेक हों और सभी सुधी जनों का सहयोग हो तो कठिन से कठिन कार्य भी देर-सबेर संभव हो जाता है। इस स्मारिका के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। रचनाएँ संकलित कर प्रो० रामनाथ राय, श्री भिखारी नाथ, श्री जगदीश सिंह और श्री जयमंगल सिंह जी ने वर्षों पूर्व मुझे प्रकाशनार्थ सुपुर्द कर दिया था। कलम का मजदूर के घर में कागजों और पुस्तकों की ढेर में यह सामग्री खो न जाए, इसलिए मैंने इसे एक बेहद कीमती धन के रूप में सुरक्षित रखा। पुस्तक लेखन एवं पत्रिका संपादन के कार्यों से मैं अबतक विगत कई दशकों से जुड़ा रहा हूँ। इसलिए मैं जानता हूँ कि प्रकाशनार्थ समग्री का संकलन और फिर उसे प्रकाशित कराना कितना दुष्कर कार्य है। किन्तु कर्म के प्रति आस्था अडिग हो तो कठिन कार्य भी सरल हो जाता है। दान-स्वरूप धीरे-धीरे राशि पहुँचती गई। इनमें भोजपुरी के कवि और कथाकार श्री सत्यनारायण सिंह (राजीवनगर), श्री हरेराम पटेल (दिल्ली), श्री भिखारी नाथ (नयागाँव), श्री जगदीश सिंह (बाजितपुर), श्री प्रेमशरण (पटना), प्रो० रामनाथ राय (नयागाँव), श्री श्यामदेव प्रसाद (पटना) तथा श्री वीरेन्द्र नाथ पाठक (पटना) के नाम उल्लेखनीय हैं। उन सबों के प्रति आभार।

इसके प्रकाशन और संपादन में मुझे आदरणीय श्री जयमंगल सिंह, श्री भिखारी नाथ, श्री जगदीश सिंह, प्रो० रामनाथ राय आदि का परामर्श एवं सहयोग मिलता रहा। अतएव वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

डॉ० शिवनारायण जी वय की दृष्टि से भलेही मेरे अनुज तुल्य हैं किन्तु विद्वता और ज्ञान की दृष्टि से वे अग्रज हैं। यदि उनका हमें समय-समय पर सहयोग न मिलता तो यह कार्य इतना जल्द और कुशलपूर्वक संपन्न नही होता। अतएव उन्हें अनेक धन्यवाद। कॉस्मिक कम्प्यूटर्स के संचालक श्री संजय जी साधुवाद के पात्र है जिन्होंने भरपूर सहयोग दिया।

सद्भावपूर्ण ग्रामीण वातावरण में स्वस्थ शैक्षिक एवं सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण कर उसे सदैव पल्लवित एवं पुष्पित करने का दायित्व स्थानीय जन समुदाय का होता है। इसी पावन उद्देश्य के साथ नयागाँव में इन संस्थाओं का निर्माण किया गया है।

आइये, हम सभी एकजुट होकर समाज, साहित्य, राज्य और राष्ट्र की समृद्धि में योगदान करने की प्रतिज्ञा करें ताकि आपका क्षेत्र राज्य और राष्ट्र का गौरव स्थल हो सके।

अन्त में कविवर रघुवीर नारायण जी की पावन स्मृति में विनम्र श्रद्धांजलि सहित

-डॉ० राम शोभित सिंह

www.bhojpurisahityangan.com

बटोहिया

□ रघुवीर नारायण

'बटोहिया' शीर्षक भोजपुरी काव्य के ख्यातिप्राप्त कवि रघुवीर नारायण अपने समय में तो बहुचर्चित थे ही, आज भी विविध महत्वपूर्ण अवसरों पर उनकी प्रस्तुत कविता 'बटोहिया' का गायन सुनकर हर श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाता है। इस भोजपुरी गीत की रचना कर उन्होंने एक कीर्तिमान स्थापित कर दिया। यह गीत भारत के बाहर विदेशों में भी जैसे मॉरीशस, ट्रिनीनाड, दक्षिण अफ्रिका के भारतीय परिवारों के बीच काफी लोकप्रिय रहा। -संपादक

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरे प्राण बसे हिम खोह रे बटोहिया।

एक द्वार घेरे राम हिम कोतवलवा से,
तीन द्वार सिन्धु घहरावे रे बटोहिया।।

जाऊ जाऊ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ।
जहवाँ कुहुकि कोइली बोले रे बटोहिया।।

पवन सुगन्ध मन्द अगर गगनवाँ से
कामिनी बिरह राग गावे रे बटोहिया।।

बिपिन अगम घन सघन बगन बीच,
चम्पक कुसुम रंग देवे रे बटोहिया।।

द्रुम बट पीपल कदम्ब अम्ब नीम वृक्ष,
केतकी गुलाब फूल फूले रे बटोहिया।।

तोता तूती बोले राम बोले भेंगरेजवा से,
पपिहा के पी पी जिया साले रे बटोहिया।।

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरे प्राण बसे गंगा धार रे बटोहिया।।

गंगा रे जमुनवाँ के झममग पनियाँ से,
सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया।।

ब्रह्मपुत्र पंचनद घहरत निसि दिन,
सोनभद्र मीटे स्वर गावे रे बटोहिया।।

www.bhojpurisahityangan.com

अपर अनेक नदी उमड़ी घुमड़ी नाचे,
जगन के जदुआ जगावे रे बटोहिया।।

आगरा प्रयाग काशी दिल्ली कलकतवा से,
मोरे प्रान बसे सरजू तीर रे बटोहिया।।

जाऊ जाऊ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ,
जहाँ ऋषि चारो वेद गावे रे बटोहिया।।

सीता के विमल जस राम जस कृष्ण जस,
मोरे बाप दादा के कहानी रे बटोहिया।।

व्यास वाल्मीकि ऋषि गौतम कपिलदेव,
सुतल अमर के जगावे रे बटोहिया।।

रामानुज रामानन्द न्यारी प्यारी रूपकला,
ब्रह्म सुख वन के भँवर रे बटोहिया।।

नानक कबीर गौरी शंकर श्रीरामकृष्ण,
अलख के गतिया बतावे रे बटोहिया।।

विद्यापति कालिदास सूर जयदेव कवि,
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया।।

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरे प्राण बसे हिम खोह रे बटोहिया।।

जाऊ जाऊ भैया रे बटोहि हिन्द देखि आऊ,
जहाँ सुख झुले धान खेत रे बटोहिया।।

बुद्धदेव पृथु वीर अरजुन शिवाजी के,
फिरि फिरि हिम सुधि आवे रे बटोहिया।।

अमर प्रदेस देस सुभग सुधर बेस,
मोरे हिन्द जग के निचोर रे बटोहिया।।

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेहिं,
जन ''रघुवीर'' सिर नावे रे बटोहिया।।

◆

www.bhojpurisahityangan.com

रघुवीर नारायण के यशस्वी कुल-परिवार

□ पाण्डेय कपिल

बाबू रघुवीर नारायण के जनम एगो सम्भ्रान्त, सम्पन्न, सुशिक्षित आ सुसंस्कृत श्रीवास्तव कायस्थ परिवार में भइल रहे। इनकर वंश-परम्परा पुरान बा, जवना के पिछला सात सौ बरिस के इतिहास उपलब्ध बा।

बाबू रघुवीर नारायण के पुरखा लोग मूलत: काश्मीर के निवासी रहे, जे कालान्तर में, मुहम्मद तुगलक के जमाना में इलाहाबाद जिला के 'कड़ा मणिकपुर' नामक जगह में आके बस गइल रहे। उहाँ से, रघुवीर बाबू के एगो पुरखा ठाकुर बलभद्र दास, शम्सुद्दीन हाजी इलियास के शाहजादा लोगन के बोलवला पर सन् 1352 ई० में हाजीपुर अइले आ कसमर परगना के कानूनगो बहाल भइले। ऊ सोनपुर में गंगा-गंडक के संगम पर बाबा हरिहरनाथ के मन्दिर का लगे अकबरपुर में आपन घर बनवले। उनकर पाँचवीं पीढ़ी में ठाकुर वासुदेव दास, एगो महात्मा का सुझाव पर, मही नदी के किनारे एगो नया गाँव बसवले 'नयागाँव' आ अपना परिवार का सँगे उहँई आके बस गइले।

ठाकुर बलभद्र दास से गिनल जाय त बाबू रघुवीर नारायण एह वंश के चउदहवीं पीढ़ी में अइहें। बारहवीं पीढ़ी तकले, एही कुल-परिवार के कुल सोरह आदमी लगातार कसमर परगना के कानूनगो होत अइले। सोरहवाँ कानूनगो रहले ठाकुर दिगम्बर लाल सिंह, जे रघुवीर बाबू के दादा के सबसे बड़ भाई रहले। जब ईस्ट इंडिया कम्पनी के राज भईल त कम्पनी कानूनगो के पद उठा दिहलस, आउर सोरहवां कानूनगो ठाकुर दिगम्बर लाल सिंह के छोट भाई आ रघुवीर नारायण के दादा ठाकुर मनियार सिंह छपरा के कलक्टर के पेशकार आ सिरिस्तेदार बहाल भइले। बाबू रघुवीर नारायण के पिता बाबू जगदेव नारायण छपरा के नामी वकील रहले। रघुवीर नारायण के आपन बड़ भाई बाबू शुकदेव नारायण सीनियर डिप्टी कलक्टर रहले। बाबू रघुवीर नारायण के बुआ वृषभानुदुलारी (बिरखा बुआ) के बेटा बाबू महेश्वर प्रसाद म्योर सेंट्रल कॉलेज में प्रोफेसर आ बाद में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार रहले। आगे चलके ई 'बिहारी' नाम के दैनिक पत्रिका के सम्पादक आ पटना यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार भइल रहले।

रघुवीर बाबू के दादा ठाकुर मनियार सिंह के दोसरका बेटा बाबू राज बिहारी सहाय के दूगो बेटा (बाबू रघुवीर नारायण के चचेरा भाई) रायबहादुर बाबू सूर्या प्रसाद आ रायबहादुर बाबू गौरीशंकर सहाय अपना जमाना में भागलपुर के नामी वकील भइल लोग। बाबू सूर्या प्रसाद के बेटा श्री मुक्तेश्वर प्रसाद भागलपुर नगर पालिका के चेयरमैन आ भागलपुर यूनिवर्सिटी के प्रो-वाइस चांसलर [illegible] एक कुल-परिवार के आउर बहुत लोग ऊँचे से ऊँचे पद पर काम क के नाम कमइले बा।

बाबू रघुवीर नारायण के तीन बेटा रहले-वीरेन्द्रदेव नारायण, कौशलेन्द्रदेव नारायण आ हरेन्द्रदेव नारायण। वीरेन्द्रदेव नारायण के बेटा हवे अवधेन्द्रदेव नारायण आ सीतेन्द्रदेव नारायण। हरेन्द्रदेव नारायण के तीन गो बेटा बाड़े, जवना में सबसे बड़ प्रताप नारायण बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी में काम करेले आ दूगो बेटा श्री दिवाकर आ श्रीकान्त आर्मी आ नेवी में ऊँचा पद पर बा लोग। हरेन्द्रदेव जी के बेटी डॉ० निकुंजनीलिमा पटना विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रहली।

लगभग सात सौ बरिस के एह सुदीर्घ वंश-परम्परा में उच्च सरकारी सेवा, राजनीति, धर्म, अध्यात्म, सामाजिकता, संगीत-साधना आ साहित्य-सेवा के अदभुत इतिहास देखे के मिलेला। विद्याध्ययन आ विद्याविलास एह यशस्वी कुल-परिवार के परम्परा रहल बा। एह कुल-परिवार के अनेक लोग संगीत के साधना कइले बा, त दर्जनो लोग साहित्य के सेवा कइले बा। फारसी, संस्कृत, उर्दू, हिन्दी, ब्रजभाषा, भोजपुरी आ अंग्रेजी में अधिकारपूर्वक साहित्य-रचना के एगो लमहर परम्परा एह कुल-परिवार के विशिष्टता रहल बा, आ ऊ विशिष्टता, समय बदल गइला का बावजूद, आज ले कायम बा।

रघुवीर नारायण के परदादा ठाकुर भूपनारायण फारसी के जबर्दस्त विद्वान आ कुशल गद्य-लेखक रहले। सुनल जाला कि उनकर लिखल फारसी ग्रंथ 'बोज़हत अफ़ज़ा' उनका वंशधर लोग के पास आजो उपलब्ध बा।

ठाकुर भूपनारायण के छोट भाई ठाकुर पहलवान सिंह फारसी गद्य-पद्य के पारंगत लेखक रहले। ई 'खुरेशर' उपनाम से कविता लिखत रहले। फारसी कविता के इनकर दीवान (संग्रह) भी रहे, जवना में के खाली पाँच गो कविता मिलेला। बाकी दीवान नष्ट चुकल बा। उनकर कुल्ह कविता निर्गुणी मारफती बा। ठाकुर पहलवान सिंह के संगीत में भी महारत हासिल रहे।

www.bhojpurisahityangan.com

ठाकुर भूपनारायण के सौतेल बड़ भाई ठाकुर संतोष नारायण के बेटा (रघुवीर बाबू के चचेरा दादा) ठाकुर कृपा-नारायण भी कवि रहले। ई *'आशिक गदा'* नामक काव्य-ग्रंथ लिखले। ई ग्रंथ छपल बा। एह ग्रंथ के शुरू के छन्द में ई आपन वंश-परिचय भी देले बाड़े। एह काव्य में इस्लाम के दार्शनिकता का साथे-साथे दूगो प्रेम-विह्वल प्राण के मर्मस्पर्शी कथा बाटे। एह ग्रंथ के शैली फकीराना बा। संयोग-श्रृंगार के भी ई आकर्षक वर्णन कइले बाड़े। इनकर कुछ पाँती इहाँ दिहल जाता। कृष्ण से तंग आके राधा कहत बाड़ी-

"औरन को छाँड़ि मोहि रोकत हौ बार-बार
कहौं हौं पुकारि मारि रारि मच जायगी
धाय-धाय अंचल करौ झोरो झकझोरो ना
सारी मोरी फटिहैं तो कामरी बिकायगी
जीवन-बल थाकै हौ अंगन पर हाथ धरत
एको लर मोतिन जो टूटि जो हेरायगी
एक एक मोतिन के मोलन के पाछे कृपा
नन्द वो जसोदा कान्ह तिनहू बिकायगी।

ठाकुर भूपनारायण के एगो आउर सौतेल बड़ भाई ठाकुर कीरत नारायण *'आल्हा-ऊदल'* काव्य फारसी में लिखले रहले। ऊ मीर कासिम के सहपाठी आ दोस्त रहले। आल्हा-ऊदल के कथानक पर लिखल आपन फारसी काव्य ऊ मीर कासिम के समर्पित कइले रहले।

ठाकुर भूपनारायण के दोसरका बेटा (रघुवीरनारायण के दादा) ठाकुर मनियार सिंह अरबी-फारसी के विद्वान कवि रहले। इनकर काव्य-शैली महाकवि उर्फी से प्रभावित रहे। ई फारसी में *'मरहबाय ब्राह्मण'* नाम के काव्य लिखले रहले।

ठाकुर मनियार सिंह के जेठ बेटा (रघुवीर बाबू के आपन बड़ चाचा) बाबू रामबिहारी सहाय भी कवि रहले। ई फारसी, ब्रजभाषा आ भोजपुरी में काव्य-रचना कइले रहले। फारसी में लिखल इनकर तीन गो कसीदा इनका वंशधर लोग का पास अबहिंयों मौजूद बा। इनकर हिन्दी आ भोजपुरी के कईएक कविता आ गीत ओह इलाका के पुरान लोगन का इयाद रहे, बाकिर ऊ पुरनका लोग उठत चल गइल आ उनका छितराइल कवितन के संग्रह ना हो सकल। शीतलपुर-बरंजा (सारन) के निवासी आ छपरा के नामी मोख्तार बाबू शिवशंकर सहाय, जे अपना समय के नामी संगीतज्ञ रहले, बाबू रामबिहारी सहाय के जिगरी दोस्त रहले, आ उनकर कविता संगीतबद्ध क के गावत रहले। लगभग तीस बरिस पहिले शिवशंकर सहाय का घरे रामबिहारी सहाय के कुछ कविता पुरान कागजन में मिलल रहे जे शिवशंकर सहाय के वंशधर लोग बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के साहित्यिक इतिहास विभाग में जमा करा दिहल। हिन्दी के रीतिकालीन कवि बिहारी के नाम पर इनका के लोग 'बिहारी बिहारी बाबू रामबिहारी सहाय', कहत रहे। बाबू रामबिहारी सहाय अपना प्रतिभाशाली भतीजा बाबू रघुवीर नारायण के बहुत मानत रहले। राधिका के सौन्दर्य-वर्णन, बिहारी बिहारी बाबू रामबिहारी सहाय के काव्य के प्रतिमान के परिचायक बाटे:-

"खासे खसखाने में विरचित सुरंग सेज
आभा बिकास दीप दिनकर ते दौगुनी
सोभा है अपार रूप राधिका बखानै कौन
गिरिजा ते गिरा रूप रम्भा ते सौगुनी"
राम का हाथे शिव-धनुष-भंजन के इहो
वर्णन देखे लायक बा।

"तरके वाराह दन्त अरके दिगन्ती रद
पचकी गति कूओं की कमंठ पी दरके
बरके सुमेरु मेरु, धरके दिल देवन के
फरके फनीस, तेज ढरके नाग करके
कहत 'बिहारी' कवि खरके भूप देसन के
आसन सिंहासन पाक सासन के लरके
करके सरासन भाग भरके गजेन्द्र वीर
सरके सान सूरों के हरके बैल हर के"

एही वंश के एगो आउर कवि ब्रह्मदेव नारायण 'ब्रह्म' जी बाबू रामबिहारी सहाय के समकालीन रहले ब्रह्म जी भोजपुरी आ हिन्दी के सशक्त आ लोकप्रिय कवि रहले। ई दार्शनिक योगाभ्यासी आ संगीतज्ञो रहले। पड़ोस के गाँव आमी के प्रतिष्ठित अम्बिका भवानी का स्तुति में रचल इनकर गीत बहुत प्रसिद्ध आ लोकप्रिय भइल, आ लोककंठ में सुरक्षित रहल; बाकिर ओकर लिखित पाठ आज सुलभ नइखे।

बाबू रामबिहारी सहाय के ही समकालीन एह वंश के एगो दोसर कवि रहले बाबू रामदीन सहाय। ई ब्रजभाषा आ हिन्दी में काव्य-रचना करत रहले। इनका कवितन के एगो संकलन छपलो रहे, बाकिर अब ऊ मिलत नइखे।

ठाकुर मनियार सिंह के तिसरकू बेटा आ बाबू रघुवीर नारायण के पिता बाबू जयदेव सहाय छपरा में वकालत करत रहले आ उनकर वकालत खूब चलत रहे। एह से उनका समय के अभाव रहत रहे। बाकिर एकरा बावजूद ऊहो कविता करत रहले आ संगीत के साधना करत रहले। सितार उनकर प्रिय वाद्य रहे आ ऊ अक्सरे साँझ का बेरा सितार बजावस। ई धार्मिक प्रवृत्ति के रहले आ सुदामा चरित आउर माँ

.....शेष पृष्ठ 9 पर

www.bhojpurisahityangan.com

प्रेम के कवि : रघुवीर नारायण

□ नगेन्द्र प्रसाद सिंह

रघुवीर नारायण अपना मातृभाषा भोजपुरी के अमर कवि होखे का साथ-साथ अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू आ फारसी में भी उच्च कोटि के कविता लिखलन, जवना के रचना-शिल्प के यष्टि (structure) भोजपुरी लोकगीतन के लय, सुर आ तान का निअरा रहे। रघुवीर नारायण के सउँसे रचनावली के निअरा से देखला का बाद दृढ़ता से कहल जा सकेला कि उहाँ का 'प्रेम के कवि' (a poet of love) रहलीं हँ। एही के कुछ लोग रोमांटिक, मिस्टिक, देश-भक्ति, आध्यात्मिक आदि नाँवो देला; बाकिर 'प्रेम' के नगिचा के संबंध श्रृंगार से होला। एकर प्रारंभिक सोपान बेला-व्यक्तिगत मानव प्रेम, जवना में संयोग आ वियोग होला, लालसा आ दर्द होला, उल्लास आ निराशा होला, संघर्ष आ पश्चाताप होला। रघुवीर नारायण कीट्स का तरह अपना प्रेयसी पर कविता गीत लिखलन कि ना, कालिदास का तरह मेघ से सनेस भेजवलन कि ना एकर कवनों प्रामाणिक उदाहरण नइखे मिलत; बाकिर बय:संधि काल (13 से 19 बरिस उमिर) के रचना 'ए टेल ऑफ बिहार' (प्रकाशन सन् 1905 ई०) में वर्णित काव्य-कथा के केन्द्र में एगो बिहारी बालिका बिआ, जेकरा सुघराई पर मोहित हो के एगो राजपूत राजा आक्रमण करत बा आ आकरा बाय के युद्ध में हरा के ओह सुघर कन्या से बिआह रचावत बा । मनोविश्लेषणवादी समीक्षक यह कथा-चयन का पाछा कवि के दमित वासना मानस या टी० एस० इलियट के जोरदार अनुभूति (powerful feelings), त एह पर एतराज ना कइल जा सके- ई अलग बात बा कि रघुवीर नारायण जी के व्यक्तिगत जीवन के कवनों दस्तावेज आ साथी-संगी से प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध ना रहला से अन्त:साक्ष्य पर भरोसा कइला का अलावे कवनों विकल्प तत्काल बँचल नइखे। उनका 'प्रेम के कवि' भईला के इत्तफाक नां मानल जा सके काहे कि उनकर दोसर रचना 'सीता हरण (अंग्रेजी) आ' तिसर रचना 'वे-साइड ब्लॉसम' (प्रकाशन, सन् 1929 ई०) उनका जिनगी के ओही काल के रचना हँ 'सीता-हरण' त नारी के पावे के संघर्ष-कथा बा, त 'वे-साइड ब्लॉसम' में प्रकृति का सुरम्य गोदी में विकसित होत मानवीय सौन्दर्य के विविध स्थितियन आ परिवेशन में छिटफुट कवितन के संकलन। प्रेम के पीड़ा के दैहिक आ मानसिक स्तर गहराई से भोगला का कारण एकर निराशावादी प्रभाव 22 बरिस के युवक के हृदय पर पड़ल बा, तबे नूँ सन् 1905-6 ई० में हृदय-रोग के झटका इहाँ के सहे के पड़ल, आ ऊ इहाँ के यशस्वी छात्र-जीवन के ले डूबल।

व्यक्तिगत प्रेम (संयोग आ वियोग) के उमिर होला, ओकरा बाद ओकर सरूप बदल जाता। जवानी में प्रेम के कवि सामान्यत:श्रृंगार-प्रधान वीर-रस के रचना करेला आ ज्यादातर ओकर प्रेमास्पद ओकर देश, राष्ट्र, जाति (Race) आ प्रकृति के सौन्दर्य बन जाला- ई अलग बात बा कि कवि बलपूर्वक अपना व्यक्तिगत प्रेम-भावना के कुछ लमरा के वय:संधि के पार जवानी का अन्त ले नाहके खींच ले जालन आ हरमेसा अपने के होहरावत रहेलन, बसिया बाँचल के गरमा-गरमा के जेंवत-जेंवावत रहलन। रघुवीर नारायण के व्यक्तिगत प्रेम 'राष्ट्रीय प्रेम के विस्तार' पा गइल। सन् 1905 ई०, से ही उहाँ के अंग्रेजी में लिखल कथाश्रृंखला 'फॉक टेल्स ऑफ बिहार' के नियमित प्रकाशन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पत्रिका में होखे लागल आ बौद्ध स्थान लखमाला ('आभा') में वैशाली का विषय में अंग्रेजी में 'वैशाली' के इतिहास, 'श्वेतपुर मोनास्ट्री', दी रोप एट सारनाथ', 'हिस्ट्री ऑफ सारन', हिस्ट्री ऑफ मुजफ्फरपुर', 'केंडर एण्ड विकमशीला' आदि निबंध कलकता आदि विभिन्न स्थानन से प्रकाशित भइले सँ । ई सभ रघुवीर नारायण के राष्ट्र-प्रेम के टुकी-टुकी जुड़ाव के प्रसंग रहलें सँ । कुछ आगे बढ़ला पर कवि के राष्ट्र-प्रेम के सोगहग स्वरूप लउकल आ ऊ सन् 1911-12 ई० (27-28 बरिस के उमिर) में राष्ट्र-प्रेम के एगो सोगहग रचना 'बटोहिया' अपना मातृभाषा में उरेहलस, जवना में मातृभूमि भारत के सोगहग, सुघर आ उदात्त भौगोलिक सरूपे ना निखरल, बलुक भारत के सउँसे संस्कृति, इतिहास, निवासी, पशु-पक्षी, रीति-रिवाज, धर्म-दर्शन, भौतिक-आध्यात्मिक सम्पदा भी प्रभावी ढंग से मुखर भइल। अँग्रेजन से बढ़िया अंग्रेजी लिखे वाला कवि अपना राष्ट्रीय गीत बन गइल 'बटोहिया' के अपना मातृभाषा भोजपुरी में लिखे के जे संकल्प कइल, ओकरा पाछा ओकरा में राष्ट्रीय अस्मिता के चिन्तन के अभ्युत्थानो माने के चाहीं आ ओकर सफल सामाजिक स्वीकृति (जवन सन् 1912 ई०) के मोतीहारी में आयोजित छात्र-कांग्रेस के मंच पर स्व० गोपी बाबू के सस्वर पाठ भा आजादी के लड़ाई सन् 1912 से 1947 तक

www.bhojpurisahityangan.com

भा भारतेतर राष्ट्रन-मॉरिशस, सूरिनाम आदि-के भारत-मूल के लोगन के कंठहार बनला से प्रमाणित बा। द्विवेदीयुगीन राष्ट्रीय कविता के प्रमुख कवियन-मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखन लाल चतुर्वेदी आदि सैकड़न-में रघुवीर नारायण के ई एगो राष्ट्रीय कविता उनका के पांक्तेय स्थान दिआवे में समर्थ भइल। भोजपुरी खातिर भी ई गौरव के बात बा। **'बटोहिया'** जइसन छोट आ सोगहग रचना के प्रेरणा रघुवीर नारायण जी पर अतना गहिरा पड़ल कि अंग्रेजी में एगो अउरू खण्ड-काव्य लिखलन 'दि बैटल ऑफ केरेन' (सन् 1945 ई०), जवना में अबिसिनिया आ इटली के बीच युद्ध में अँग्रेजी सेना का अंग का रूप में लड़ेवाली भारतीय सेना के नायक बनावल गइल। पूरा राष्ट्र के गौरव, बलिदान आ वीरता एह खण्डकाव्य के आत्मा बन गइल। राष्ट्र-प्रेम के अतना बड़ ऊँचाई तक पहुँचा दिहल प्रेम के कवि रघुवीर नारायण के परिवर्त्तित सामाजिक प्रेम-भावना के प्रासाद ह, जवना पर कवनों राष्ट्र के गौरव हो सकेला।

प्रेम के चरम उत्कर्ष ह-अध्यात्म। एह में मानव के व्यक्तिगत प्रेम या सामाजिक प्रेम उदात्त स्वरूप ग्रहण क लेवेला। सन् 1927 ई० से अयोध्या में मधुरोपासना के साधक रूपकला जी से रघुवीर नारायण के संपर्क भइल आ ओही समय से भक्ति आ अध्यात्म के बीज उनुका हृदय में अँकुरे लागल। अब ऊ भगवत्-चिन्तन करस, पूजा-पाठ में मन लगावस, ध्यान-आसन करस आ भाव-विभोर हो के तुलसी के विनयपत्रिका आ सूर के पद नाच-नाच के गावस। यही क्रम में उनुकर भक्ति-गीतन के आविर्भाव भइल आ किंवदंती बा कि हनुमान जी के दर्शन का बाद 'रामायण' भोजपुरी में लिखे के अन्त:प्रेरणा मिलल। भोजपुरी में उपलब्ध 'रघुवीर रस-रंग' धर्म, भगवद्भक्ति आ उपासना के भाव से भरल कवितन के संकलन बा, जवना में चार खण्ड बा :- (क) बहनादि विषयक 13 कविता (धर्म आ दर्शन पर आधृत); (ख) 'विनय मंजरी' में तुलसीदास के विनयपत्रिका आ सूरदास के पदन के समानान्तर रचना; (ग) 'गीतावली' में तुलसीदास के गीतावली आ सूर के विनय के पद के समानान्तर रचना बा आ (घ) 'संकीर्त्तन के पद' में नाम-महिमा के उजागर कइल गइल बा। एह पुस्तक के अधिसंख्य रचना भोजपुरी में बा बाकिर अउरू रचनन में भाषा-मोहो छूटत लउकत बा। ब्रजभाषा, बज्जिका आदि भी प्रचुरता से प्रयुक्त रहे। सही क्रम में जैन आ बौद्ध धर्म आ दर्शन पर भी अँग्रेजी में निबंध लिखाइल रहे। रघुवीर नारायण जी अपना जीवन के अन्तिम काल में पूरा-पूरा सधुआ गइल रहीं आ कवनों यश, मान भा सम्पति के इच्छा शेष ना रह गइल रहे। देर तक ध्यान-पूजा कइल, भाव-विभोर हो के भक्ति-संगीत गावल आ भक्ति-संबंधी रचना कइल। उहाँ के छोट साथी लोग कहेला कि उहाँ का अपना खराब स्वास्थ्य का बावजूद घंटन भक्ति-चर्चा करीं, सत्संग करीं आ आत्मानुभूति के संकेत करीं। ई प्रेम के पराकाष्ठा रहे आ आत्मा के उदात्तता। 'रघुवीर नारायण का डायरी का पन्नन में उनका एह काल के रचना आउर मिल सकेला। 'रामायण' त पूरा ना हो सकल, बाकिर ऊ एह बात के प्रमाण बा कि भोजपुरी भाषा आ लोक-छन्द में ई सामर्थ बा कि ऊ रामायण के कथा बान्ह सकेला।

एह तरह से, रघुवीर नारायण 'प्रेम के कवि' रहलन आ उनकर पूरा जीवन आ सउँसे रचना संसार प्रेम के विविध रूपन के क्रमिक विकास के दीप-स्तम्भ रही सँ। ◆

पृष्ठ 7 का शेष.....

भगवद्गीता के नित्य पाठ करत रहले। काफी उमर बढ़ गइला के बाद ऊ संस्कृत ग्रंथ 'सिद्धांत कौमुदी' के अध्ययन कइले। गजल ऊ काफी लिखले रहले, बाकिर उनकर रचना आज उपलब्ध नइखें। बाबू रघुवीर नारायण के अपना बाबूजी के फारसी कविता के दू पाँती इयाद रहे, जे ऊ अक्सर सुनावत करस-

"ब्या ऐ बागबाँ गुलशन ब्यानिं दरसोज़ जो ग़महस्तम्
यो बुलबुल नाल जन गिरियाँ बगुल जारे अलंहस्तम्"

बाबू रघुवीर नारायण के जिनिगी में अपना पिता के धार्मिकता आ साहित्य-रचना के संस्कार मिलल रहे। बहुभाषा ज्ञान के भी परंपरागत विरासत उनका मिलल रहे, आ ऊहो अनेक भाषा में रचना कइले-भोजपुरी, हिन्दी, उर्दू, ब्रजभाषा, संस्कृत आ अंग्रेजी में। जादे ऊ अंग्रेजीए में लिखले। उनकर अनेक किताब अंग्रेजी में छपल। ब्रिटेन के 'कवि आस्टिन' तकले उनका अंग्रेजी रचना आ ज्ञान के प्रशंसा कइले। बाकिर भोजपुरी के उनकर एगो रचना 'बटोहिया' उनका के जन-जन के आत्मा तक पहुँचा के उनका के अमर बना दिहलस। ऊ परम सन्त एवं श्रीसीताराम जी के अनन्य भक्त श्री रूपकला जी के शिष्य रहले आ हृदय से परम आस्तिक आ भक्त रहले। उनका डायरी से पता चलेला कि उनका भगवान के दर्शन भइल रहे। उनका धार्मिक आ साहित्यिक संस्कार उनका अपना कुल-परिवार से विरासत में मिलल रहे।

.....शेष पृष्ठ 13 पर

www.bhojpurisahityangan.com

'बटोहिया' के अमर गायक
बाबू रघुवीर नारायण

□ निशान्तकेतु

बाबू रघुवीर नारायण साहित्य और संस्कृति के उद्गाता कवि थे। द्विवेदी युग के इस यशस्वी कवि ने भाषा और लोकभाषा की चेतना एवं शब्दचैतन्य के बीच एक सफल सेतुबन्ध का दायित्व निवाहा था। 'बटोहिया' के अमर गायक के रूप में इनका नाम हिन्दी-साहित्येतिहास में सदैव ज्योतिरक्षरित रहेगा। बाबू रघुवीर नारायण का जन्म बिहार-राज्य के छपरा जिले के दहियावाँ मुहल्ले में सन् 1884 ई० के 30 अक्टूबर को हुआ था। इनका लोकान्तरण पहली जनवरी सन् 1954 ई० में सत्तर वर्ष की अवस्था में हुआ। इनका जन्म मुहर्रम के ताजिया के वक्त मध्यनिशा में हुआ और महाप्रयाण नववर्ष के हर्षोल्लास के बीच हुआ। यह श्रीवास्तव कायस्थ-कुल के सुपठित एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। इनका पूर्वज कश्मीर से आये थे।

अम्बिकादत्त व्यासजी बाबू रघुवीर नारायण के आदरणीय गुरु थे। यह पूर्वराष्ट्रपति **डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद** के साथ एक ही विद्यालय में तीन कक्षा पीछे के छात्र थे। राजेन्द्र बाबू के साथ इनकी अन्तरंगता शैशव से ही थी। स्कूल की पढ़ाई पूरी कर यह पटना कॉलेज में नामांकित हुए। अँगरेजी ऑनर्स के साथ इनके अन्य विषय थे, इतिहास, फारसी और तर्कशास्त्र। सन् 1903-4 ई० के उन दिनों पटना कॉलेज प्राचार्य थे अँगरेजन विद्वान् **डाक्टर विल्सन**। संस्कृत के विश्वप्रसिद्ध और महान् दार्शनिक **महामहोपाध्याय पण्डित रामवतार शर्मा** उन दिनों संस्कृत विभाग के प्राध्यापक थे। सन् 1905 ई० में रघुवीर बाबू ने 'ए टेल ऑव बिहार' की रचना की। उसी समय यह अध्यात्मगुरु एवं मधुरोपासक रूपकलाजी के सम्पर्क में आये। बनैली-नरेश राजाबहादुर कीर्त्यानन्द सिंह के निमन्त्रण पर इन्होंने उनके निजी सचिव का पदभार ग्रहण किया, जहाँ वे सन् 1912 से 1932 ई० तक कार्यरत रहे। अवकाश ग्रहण के बाद भी इन्हें पेंशन आजीवन मिलती रही। **हास्यरसावतार पण्डित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी** रघुवीर बाबू से मिलने प्रय: बनैली जाते रहते थे। इनके निवास को सभी साहित्यिक तीर्थस्थली कहते।

बनैली-नरेश ने बाबू रघुवीर नारायण की समर्पित सेवा से प्रभावित तथा इनकी प्रतिभा से पुलकित होकर पुरस्कार-स्वरूप इन्हें पाँच सौ बीघा भूमि दान की थी। रघवीर बाबू ने बनैली-नरेश-वंशधर कुमार कृष्णानन्द सिंह को यह समस्त भूमि स्वेच्छा से लौटा दी।

रघुवीर नारायण अंगरेजी, हिन्दी, बँगला, संस्कृत, फारसी और भोजपुरी के अधिगत विद्वान् थे। इन्होंने इन छहों भाषाओं में साहित्य-सर्जना की है। इनमें अँगरेजी, हिन्दी और भोजपुरी की रचनाएँ अधिक है। सबसे अधिक रचनाएँ अँगरेजी में हैं। इनके भाषाधिकार की सर्वत्र प्रशंसा हुई है। रघुवीर नारायण की अँगरेजी कृतियाँ है : 'ए टेल ऑव बिहार', 'वे साइड ब्लजम', 'सीताहरण', द व्हील ऑव टाइम', 'चम्पा' (खण्ड काव्य) 'द रोज ऑव द वाइल्ड' तथा 'द बैट्ल ऑव केरेन'।

हिन्दी में इनकी दो ही पुस्तके प्रकाशित हैं: 'रघुवीर रसरंग' और 'रघुवीर पत्रपुष्प'। 'रम्भा' इनका अप्रकाशित खण्डकाव्य है। ग्यारह जीवनियों का एक संग्रह तथा आत्मकथा भी अप्रकाशित है। इनके अतिरिक्त इनकी शताधिक कविताएँ और निबन्ध विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, किन्तु असंगृहीत पड़े हैं।

रघुवीर बाबू बंगला भाषा के जानकार ही नहीं, लेखक भी थे। उन्होंने वेदो एवं उपनिषदों के कुछ अंशो का बंगला में अनुवाद भी किया था। सन् 1953 ई० में बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद् ने रघुवीर बाबू को पन्द्रह सौ रुपये का वयोवृद्ध साहित्यिक सम्मान-पुरस्कार तो दिया, किन्तु इस बिहार-विभूति की ग्रंथावली को प्रकाशित करने की योजना नहीं बन पाई।

सन् 1906 ई० में 16 जनवरी को लिखे अपने पत्र में इंगलैण्ड के राष्ट्रकवि (पोएट लारिएट) अल्फ्रेड ऑस्टीन ने यह स्वीकार किया था कि बाबू रघुवीर नारायण का अँगरेजी भाषाधिकार तत्कालीन अँगरेज-कवियो से भी अच्छा है। भारत में अँगरेजी पर प्राजंल-प्रबल भाषाधिकार रखनेवाले विद्वानों की सूची बन रही है। इनमें उल्लेखनीय नाम हैं: माइकेल मधुसूदन दत्त, रवीन्द्रनाथ टैगोर, विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द, महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, तोरूलता, सरोजनी नायडू इत्यादि। इस विवरणी में बाबू रघुवीर नारायण का नाम सादर

www.bhojpurisahityangan.com

सम्मिलित हो रहा है।

बाबू रघुवीर नारायण को 'बटोहिया' गीत के माध्यम से सर्वाधिक यश मिला। लोकधुन पर आधारित भोजपुरी का यह गीत राष्ट्रगीत बन गया। राष्ट्रगीत की परम्परा पढ़ जो अनुसंधान और सर्वेक्षण हुए है, उनके आधार पर चार गीतो को सर्वोच्च प्रतिष्ठा है। वे हैं वन्दे मातरम्: बंकिमचन्द्र चटर्जी (सन् 1882 ईसवी), तराना-ए-हिन्द (सारे जहाँ से अच्छा.. .....): डॉ० इकबाल (सन् 1905 ई०), बटोहिया : बाबू रघुवीर नारायण (सन् 1911 ईसवी) और जनगणमन-अधिनायक : रवीन्द्रनाथ टैगोर (सन् 1912 ईसवी)।

असहयोग आन्दोलन के समय भागलपुर में महात्मा गाँधी को 'बटोहिया' गीत सुनाया गया था। सुनकर वह भावविह्वल हुए थे। **महामहोपाध्याय पण्डित रामावतार शर्मा**, पूर्वराष्ट्रपति **डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, सर यदुनाथ सरकार**, हास्यरसावतार **पंडित जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी** और **आचार्य शिवपूजन सहाय** कविमुख से बार-बार 'बटोहिया' सुनते थे। मॉरिशस और अफ्रिका में 'बटोहिया' का प्रचार था। **भवानीदयाल संन्यासी** को अफ्रिका में यह गीत सुनाया गया था। 'बटोहिया' भोजपुरी का वन्दे मातरम् है, ऐसा **आचार्य शिवपूजन सहाय** कहा करते थे। सन् 1916 ईसवी में तत्कालीन लोकप्रिय पत्रिका 'लक्ष्मी' के अगस्त अंक में टिप्पणी छपी थी: रघुवीर बाबू की 'बटोहिया' कविता का प्रचार बिहार के घर-घर में हैं। यहाँ की स्त्रियाँ इसे जाँता पीसते समय बड़े प्रेम से गाती है। शहर और देहात के अपढ़ लड़के इसे गली-गली गाते फिरते है। पढ़े-लिखों का कहना ही क्या है। यदि एक ही गीत लिखकर बाबू रघुवीर नारायण अपनी प्रतिभाशालिनी लेखनी को रख देते, तो भी उनका नाम अजर और अमर बना रहता।'

'पाटलिपुत्र' नामक पत्र में 16 सितम्बर (1917 ईसवी) के अंक में लिखा गया : 'श्रीभारतभवानी' और 'बटोहिया' शीर्षक कविता ने रघुवीर बाबू के यश को अचल-अटल बना दिया है। ये कविताएँ जैसी गँवारों को प्रिय है, वैसी ही, वरन् उससे भी कहीं बढ़कर शिक्षितों को हृदयग्राहिणी है।''

पण्डित ईश्वरीप्रसाद शर्मा ने 'रघुवीर पत्रपुष्प' की समीक्षा करते हुए 'बटोहिया' के सम्बन्ध में में लिखा है: 'बटोहिया बिहार का जातीय संगीत है। वह इस प्रान्त में घर-घर में उतना ही प्रसिद्ध है, जितना बंगाल में बंकिम बाबू का 'वन्दे मातरम्।' हजारों बार सार्वजनिक सभाओं में यह कविता पढ़ी जा चुकी है और भिन्न-भिन्न सामायिक पत्रों में सादर उद्धृत हुई है। असहयोग के प्रबल आन्दोलन के समय इसी कविता के वजन पर बहुत से मौसमी कवियों ने प्रान्तिक बोली में कविताएँ लिख-लिखकर नाम और दाम दोनों कमाये। पर मौसम खतम होते ही, वे सब कविताएँ रद्दी की टोकरी में चली गईं, पर 'बटोहिया' आजतक इसी आसन पर विराजमान है। प्रान्तिक बोली में होते हुए भी उसका महत्त्व कुछ कम नही हुआ है।'

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखा है (बिहार की साहित्यिक प्रगति): 'स्वर्गीय **बाबू रघुवीर नारायण** के लिए क्या कहा जाए। बिहार में वे राष्ट्रीयता के आदिचारण और जागरण के अग्रदूत थे। पूर्वी भारत के हृदय में राष्ट्रीयता की जो भावना मचल रही थी, वह पहले-पहल उन्हीं के 'बटोहिया' नामक पूर्वी गीत में फूटी और इस तरह फूटी कि एक उसी गीत ने उन्हें अमरों की पंक्ति में पहुँचा दिया।

यशोधन भाषाविज्ञानी डॉक्टर **उदयनारायण तिवारी** ने 'भोजपुरी-भाषा और साहित्य' नामक अपने ग्रंथ में मूल्यांकन करते हुए लिखा है : 'इस गीत में अखण्ड भारत का मनोरम चित्र खींचा गया है। इसमें एक ओर भारतीय एकता को अक्षुण्ण रखनेवाले पर्वतराज हिमालय, गंगा, यमुना तथा शोणभद्र इत्यादि के प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण है, तो दूसरी ओर नानक, कबीर, शंकराचार्य तथा परमहंस रामकृष्ण की अमरवाणी की चर्चा है। इसे यदि भोजपुरी प्रदेश का राष्ट्रगीत कहा जाय, तो इसमें अत्युक्ति न होगी।' सन् 1912 ईसवी में **मैथिलीशरण गुप्त** की 'भारत-भारती' रचना प्रकाशित हुई थी। **रवीन्द्रनाथ टैगोर** का 'जनगण-मन' गीत भी इसी वर्ष का है। 'बटोहिया' की रचना इसके पूर्व सन् 1911 ईसवी की है। परवर्ती काल में बटोहिया के अनुकरण, तर्ज और धुन पर रचनाएँ प्रकाश में आईं। जैसे: 'बेटी बेचवा', 'वोकीलवा', 'मोख्तरवा', 'पुतोहिया', 'बिदेसिया' इत्यादि। **प्रिंसिपल मनोरंजन प्रसाद** ने 'फिरंगिया' की रचना की। यह गीत तत्कालीन अँगरेजी हुकूमत द्वारा जब्त कर लिया गया था।

बाबू रघुवीर नारायण का नामोल्लेख सबसे पहले बँगला-साहित्येतिहास में **नरेन्द्रनाथ सोम** ने 'मधुस्मृति' में किया था। फिर हिन्दी-साहित्येतिहास में पहला मूल्यांकनपरक उल्लेख **आचार्य नलिन विलोचन शर्मा** ने 'प्रोग्रेस ऑव बिहार थ्रू द एजेज' ग्रन्थ में किया है। अब भी बाबू रघुवीर नारायण का अपेक्षित और यथोचित मूल्यांकन शेष है। साहित्यिक संवेदना तथा अभिव्यंजना-सामर्थ्य के साथ रघुवीर बाबू एक आत्मोपलब्ध साधक, लोकबद्ध चिन्तक और परिवारमूलीय कमनीय व्यक्ति थे। ◆

www.bhojpuriyangan.com

बाबू रघुवीर नारायण और 'बटोहिया'

विश्वनाथ सिंह 'अधिवक्ता'

बाबू रघुवीर नारायण 20वीं शती के प्रथम चरण के बहुचर्चित कवि थे, जिनकी विशुद्ध राष्ट्रीय और भक्तिपरक रचनाओं ने पूर्वी भारत में जागरण की अपूर्व लहर पैदा कर दी थी। वह आधुनिक बिहार के पहले कवि और इस प्रान्त के एकमात्र अंग्रेजी कवि के रूप में समादृत हुए। वे साहित्य और संस्कृति के उद्गाता कवि थे।

बाबू रघुवीर नारायण का जन्म बिहार प्रान्त के सारण जिले के सोनपुर प्रखंड स्थित नया गांव नामक स्थान में सन् 1884 में 30 अक्टूबर को हुआ था। सन् 1905 ई० में उन्होंने 'ए टेल ऑफ बिहार' की रचना की। वे अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला, संस्कृत, फारसी और भोजपुरी के अधिगत विद्वान थे।

बाबू रघुवीर नारायण को 'बटोहिया' गीत के माध्यम से सर्वाधिक लोकप्रियता मिली। लोक धुन पर आधारित भोजपुरी का यह गीत राष्ट्रगीत बन गया। असहयोग आंदोलन के समय भागलपुर में महात्मा गांधी को 'बटोहिया' गीत सुनाया गया था:-

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरे प्रान बसे हिम खोह रे बटोहिया।
एक द्वार घेरे राम हिम कोतवलवा से,
तीन द्वार सिन्धु घहरावे रे बटोहिया॥
जाऊ जाऊ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ,
जहवां कुहुकि कोइली बोले रे बटोहिया।
पवन सुगन्ध मन्द अगर गगनवां से,
कामिनी विरह राग गावे रे बटोहिया॥

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सोनपुर आगमन पर जब 'बटोहिया' गीत सुनाया गया था तब वह भाव विह्वल हो गये थे। 'बटोहिया' सचमुच में भोजपुरी का बंदेमातरम् है। 'बटोहिया' गीत बिहार के घर-घर में पैठ जमा ली है। यहाँ कि महिलाएँ आज भी जांता पीसते समय, खेतों में रोपनी करते समय, कटनी-सोहनी करते समय, सूप में अनाज चुनते समय, 'बटोहिया' गीत गाती हैं और अपनी थकान मिटाती हैं। वह गाती हैं:-

विपिन अगम घन सघन बगन बीच,
चम्पक कुसुम रंग देवे रे बटोहिया।
द्रुम वट पीपल कदम्ब अम्ब नीम वृक्ष,
केतकी गुलाब फूल फूले रे बटोहिया॥
तोता तूती बोले राम बोले भेंगरेजवा से,
पपिहा के पी पी जिया साले रे बटोहिया।
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरे प्रान बसे गंगा धारे रे बटोहिया॥

'पाटलिपुत्र' नामक पत्र में 16 सितम्बर (1917 ईसवी) के अंक में लिखा गया- भारत भवानी'' और ''बटोहिया'' शीर्षक कविता ने रघुवीर बाबू के यश को अचल-अटल बना दिया है। ये कविताएँ जैसी गंवारों को प्रिय है वैसी ही, वरन् उससे भी कहीं बढ़कर शिक्षितों को हृदयग्राहिणी है''। तभी तो सोनपुर क्षेत्र की नारियां गाती हैं-

गंगा रे जमुनवां के झममग पनियां से,
सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया।
ब्रह्मपुत्र पंचनद घहरत निसि दिन,
सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया॥
अपर अनेक नदी उमड़ी घुमड़ी नाचे,
जगन के जदुआ समावे रे बटोहिया।
आगरा प्रयाग काशी दिल्ली कलकतवा से,
मोरे प्रान बसे सरजू तीरे रे बटोहिया॥

बाबू रघुवीर नारायण ने भारतवर्ष का जो सर्वांगीण चित्र 'बटोहिया' में उपस्थित किया है, उसमें हमारे देश की प्राकृतिक सुषमा के साथ इसकी आत्मा और आध्यात्मिकता का भी समावेश भी है। 'बटोहिया' में भारत की जिस प्रकृति और भौगोलिक सीमा के जिस सौंदर्य तथा उदारता का वर्णन किया गया है, वह हमें कालिदास के 'मेघदूत' का स्मरण दिलाता है।

जाऊ जाऊ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ,
जहां ऋषि चारो वेद गावे रे बटोहिया।
सीता के विमल जस राम जस कृष्ण जस,
मोरे बाप दादा के कहानी रे बटोहिया॥
व्यास बाल्मीकि ऋषि गौतम कपिल देव,
सुतल अमर के जगावे रे बटोहिया।
रामानुज रामानन्द न्यारी प्यारी रूपकला,
ब्रह्म सुख वन के भंवर रे बटोहिया॥

बाबू रघुवीर नारायण के काव्यों की बौद्धिक एवं काव्यगत विशेषताओं के सूक्ष्म निरीक्षण से यह ज्ञात होता है कि ये एक प्रयोगधर्मी कवि थे। 1911 ई० में रघुवीर नारायण द्वारा 'बटोहिया' की रचना की गयी थी। हिन्दी-कविता के क्षेत्र में भारतेन्दु और द्विवेदी-युग के संधिस्थल पर खड़े रघुवीर

www.bhojpurisahityangan.com

नारायण सन् 1901 ई० से 1925 ई० तक इस प्रान्त के सर्वाधिक चर्चित और लोकप्रिय कवि रहे। बटोहिया में उन्होंने कहा है-

नानक कबीर गौरीशंकर श्री रामकृष्ण,
अलख के गतिया बतावे रे बटोहिया।
विद्यापति, कालिदास, सूरजयदेव कवि,
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया।
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरे प्रान बसे हिम खोह रे बटोहिया।
जाऊ जाऊ भैया रे बटोही हिन्द देखि आऊ,
जहां सुख झूले धान खेत रे बटोहिया॥

भारत ऋषियों की भूमि है, जहां वैदिक मंत्रों के उच्चारण से दिगदिगंत परिव्याप्त रहा है। आज भी यहां सीता की विमल कीर्ति लहरा रही है। हमारे पूर्वज राम-कृष्ण जैसे ईश्वरीय सत्ता वाले पुरुष यहीं अवतरित हुए थे। शंकर, नानक, कबीर इसी भूमि पर अवतरित हुए थे। भारत में कालिदास, जयदेव, सूर, तुलसी और विद्यापति जैसे महाकवि हुए जिनकी कीर्ति-पताका न केवल संपूर्ण भारत में, अपितु विदेशों में भी लहरा रही है। बुद्ध जैसे ज्ञानी, शिवाजी जैसे रणबांकुड़े की भूमि भारत ही है जिन पर भारत को आज भी गर्व है और जिनकी याद भुलाये नहीं भूलती-

बुद्धदेव पृथु वीर अरजुन शिवाजी के,
फिरिफिरि हिय सुधि आवे रे बटोहिया।
अमर प्रदेश देस सुभग सुधर बेस,
मोरे हिन्द जग के निचोरे रे बटोहिया॥
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेहिं,
जन "रघुवीर" सिर नावे रे बटोहिया॥

इस बटोहिया के रचयिता रघुवीर नारायणी के पिता श्री जयदेव नारायण, छपरा के एक प्रमुख वकील थे। रघुवीर नारायण की स्कूली शिक्षा छपरा जिला स्कूल में संपन्न हुई। देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद जैसे सहपाठियों के सान्निध्य में उनके साहित्यिक चिन्तन को विस्तार मिला। ऐसे कहा जाता है कि इनके पूर्वज कश्मीर से आये थे और बादशाह अकबर के समय से ही साहित्य-साधना में लीन थे।

इस प्रकार उन्हें साहित्यिक संस्कार अपने पूर्वजों की विरासत के रूप में ही मिला था। उनके पूर्वजों में हिन्दी और फारसी के अनेक कवि हो चुके हैं जिनमें कीर्तिनारायण सिंह, भूपनारायण सिंह, पहलवान सिंह, मनिआर सिंह, कृपानारायण सिंह और बाबू रामबिहारी सहाय प्रमुख थे।

राष्ट्रीय चेतना जागृत करने वाले प्रखर कवि बाबू रघुवीर नारायण का देहान्त 1 जनवरी, वर्ष 1954 ई० को हो गया। आज वे नहीं हैं लेकिन एक लोकबद्धचिंतक जागरण के अग्रदूत तथा 'बटोहिया' के अमर कवि के रूप में सर्वदा स्मरण किए जाएगें। ◆

पृष्ठ 9 का शेष.....

बाबू रघवीर नारायण के कनिष्ठ पुत्र कविवर हरेन्द्रदेव नारायण के कवि-प्रतिभा अनूठा रहे। हिन्दी साहित्य के उत्तर छायावाद काल के ऊ एगो अत्यन्त उल्लेखनीय कवि रहले। उनकर अध्ययन आ चिंतन के क्षेत्र विशाल रहे। खासकरके अंग्रेजी के उनकर अध्ययन बहुत गहिर रहे। एगो जमाना रहे, जब उनकर हिन्दी गीत 'बाँसुरी' के तूती बोलत रहे। आगे चलके ऊ भोजपुरी के प्रथम महाकाव्य 'कुँअरसिंह' के रचना कइले।

कविवर हरेन्द्रदेव नारायण के पत्नी आ बाबू रघुवीरनारायण के पतोह श्रीमती प्रकाशवती नारायण के चर्चा अगर जो ना कहल जाय त रघुवीर बाबू के कुल-परिवार के ई इतिवृत्त अधुरा रह जाई। प्रकाशवती जी अपना गीत-रचना से हिन्दी कविता के समृद्ध कइले बाड़ी। उपन्यास आ कहानी का विधा में उनकर लेखन उल्लेखनीय रहल बा। रघुवीर बाबू के एह यशस्वी कुल के सदस्य होके ऊ अपना के अपना रचनाशीलता से एह कुल के उपयुक्त कुलवधू साबित कइले बाड़ी।

बाबू रघुवीर नारायण के पोता (उनका ज्येष्ठ पुत्र वीरेन्द्रदेव नारायण के सुपुत्र) श्री अवधेन्द्रदेव नारायण आ श्री सीतेन्द्रदेव नारायण एह यशस्वी कुल के यशस्वी कुलदीपक बाड़े। अवधेन्द्र जी अपना गीत-रचना से हिन्दी आ भोजपुरी के समृद्ध कइले बाड़े। उनका हिन्दी गीतन के पुस्तकाकार संग्रह प्रकाशित बा। भोजपुरी में भी ऊ निरन्तर रचना करत रहल बाड़े। सीतेन्द्रजी हिन्दी कविता में नवलेखन से जुड़ल रहल बाड़े। उनकर कविता पिछला चार दशक से हिन्दी आ पत्रिकन के शोभा बढ़ावत रहल बा।

अवधेन्द्रदेव नारायण आ सीतेन्द्रदेव नारायण ई दूनू भाई एह यशस्वी कुल के साहित्यिक यात्रा जारी राखे वाली गाड़ी के दूगो पहिया बाड़े आ एह कुल के साहित्य, सृजन-यात्रा आजो जारी बा।

◆

www.bhojpurisahityangan.com

'बटोहिया' के गायक अमर कवि बाबू रघुवीर नारायण

प्रताप नारायण

हिन्दी-कविता के क्षेत्र में मध्य और आधुनिक युग के सन्धिस्थल पर खड़े बाबू रघुवीर नारायण सन् 1901 से 1925 ई० तक इस प्रान्त के सर्वाधिक चर्चित और लोकप्रिय कवि रहे। विशेषकर अँगरेजी कविताओं के क्षेत्र में, बिहार के अँगरेजी भाषा के एकमात्र कवि के रूप में रघुवीर नारायण का स्मरण सदैव किया जाता रहेगा। बंगाली आलोचकों ने मधुसूदन दत्त पर लिखित प्रत्येक आलोचना ग्रन्थ में मधुसूदन दत्त की तुलना बिहार के तरुण कवि रघुवीर नारायण से की है।

बाबू रघुवीर नारायण का जन्म सारन जिले के दहियावाँ गाँव में सन् 1884 ई० के 30 अक्तूबर, को एक प्रतिष्ठित कायस्थ-परिवार में हुआ था। उनके पूर्वज कश्मीर से आये थे और बादशाह अकबर के समय से ही साहित्य-साधना में लीन थे। इस प्रकार साहित्यिक संस्कार उनको पूर्वजों से विरासत में ही मिला था और 'सत्संगति महिमा नही गोई' वाली उक्ति के अनुसार अपने युग के वरेण्य साहित्यकारों, मनीषियों और विद्वानों के सान्निध्य में भी उनकी काव्य-प्रतिभा एक नहीं, अनेक भाषाओं में फूट पड़ी।

बाबू रघुवीर नारायण की स्कूली शिक्षा छपरा जिला स्कूल में सम्पन्न हुई। देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद उसी स्कूल के मेधावी छात्र थे और उनसे दो साल पीछे थे। उसी विद्यालय में पं० अम्बिकादत्तजी व्यास जैसे महाप्राज्ञ को शिक्षक के रूप में पाकर रघुवीर नारायण को एक अपूर्व मानसिक विस्तार मिला। श्रीव्यासजी जैसे महान् साहित्य-साधक ने उनकी अन्तश्चेतना में साहित्य-साधना की ललक उत्पन्न की। साहित्य-साधना में प्रवृत्त होने के तुरत बाद सन् 1897 ई० के लगभग उनका परिचय महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्माजी से हुआ। इससे भी उनके साहित्यिक व्यक्तित्व का चतुर्मुखी विकास हुआ।

पटना कॉलेज में अध्ययन करते समय अँगरेजी के तत्कालीन प्रोफेसर जेम्स ने रघुवीर बाबू को अँगरेजी में कविताएँ करने की प्रेरणा दी। फलस्वरूप, सन् 1905 ई० में उनकी 'ए टेल आफ बिहार' नामक अँगरेजी में कविता-पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसे अंगरेजी विद्वानों ने काफी पसन्द किया। उनकी अँगरेजी की अन्य सफल कृतियों में 'वे साइड ब्लासम्स', 'सीताहरण', 'द विक्टर्स रिटर्न', 'चम्पा', 'द रोज ऑफ द चाइल्ड', 'द बेटल आफ करेन', और 'द व्हील ऑफ टाइम' काफी प्रसिद्ध हुई। इनमें से अन्तिम चार कृतियाँ अब भी अप्रकाशित हैं।

इसके अन्तर डा० एनी बेसेण्ट की प्रेरणा से अँगरेजी पद्य में 'फोक टेल्स आफ [illegible] लिखा गया, जिसमें लोकगाथाओं के माध्यम से बि[illegible] सांस्कृतिक गौरव का चित्र उभारा गया है। 'ए टेल आफ बिहार' की अँगरेजी-कविताओं पर इंगलैन्ड के तत्कालीन राजकवि आल्फ्रेड ऑस्टिन ने रघुवीर बाबू को अपने 16 जनवरी, 1906 ई० के पत्र द्वारा बधाई का सन्देश भेजा था। उनकी अँगरेजी-कविताओं की प्रशंसा करते हुए बिहार के प्रशासक सर एडवर्ड गेट ने भी बधाई-सन्देश भेजा था, जिसका विवरण 24 नवम्बर, सन् 1920 ई० के सर्चलाईट' (दैनिक) में छपा था।

वैसे रघुवीर नारायण ने हिन्दी, अँगरेजी, भोजपुरी और फारसी में भी रचनाएँ कीं, किन्तु युगचेतना को स्वर देनेवाली समर्थ रचना के रूप में 'बटोहिया' को अपार ख्याति और प्रियता मिली। यह एक ऐसा गीत है, जिसमें प्राकृतिक सुषमा का सजीव चित्रण, भारत की उज्ज्वल सांस्कृतिक परम्परा का उल्लेख और अध्यात्मिकता का गहरा पुट है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की रजत-जयन्ती के अवरस पर (24 फरवरी, 1956 ई०, अपने भाषण में कहा था- "बाबू रघुवीर नारायण बिहार में राष्ट्रीयता के आदि चारण और जागरण के अग्रदूत थे। पूर्वी भारत के हृदय में राष्ट्रीयता की जो भावना मचल रही थी, वह पहले-पहल उन्हीं के 'बटोहिया' नामक गीतों में फूटी और इस तरह फूटी कि एक उसी गीत ने उन्हें अमर कवियों की श्रेणी में पहुँचा दिया।"

सन् 1911-12 ई० में 'बटोहिया' की रचना के बाद पूर्वी भारत के लाखों गाँवों में एक भावनात्मक ज्वार-सा आ गया। इससे उत्पीड़ित ग्रामवासियों को अपने लोकजीवन की वैभवशालिनी संस्कृति और अध्यात्म की उज्ज्वल परम्पराओं का बोध हुआ। अब उन्हें ऐसा आभास होने लगा कि इसी धरोहर के बल-बूते पर वे अपने खोये हुए राष्ट्रीय गौरव को फिर से प्राप्त कर सकते हैं इसकी छवि 'बटोहिया' गीत में इस प्रकार मिलती है--

इस प्रकार, जनमानस में हीन भावनाओं की जगह राष्ट्रीय गौरव की भावनाएँ घर कर गईं और वे राष्ट्रीय एकता के अटूट बन्धन में बँध गये। 'बटोहिया लिखकर रघुवीर नारायण ने यह प्रमाणित कर दिया कि वे जनसाधारण के कवि थे। उन्होंने केवल भाषा और साहित्य के विद्वानों के लिए ही अपनी कविताएँ नहीं लिखीं, वरन् एक प्रचलित

www.bhojpurisahityangan.com

भाषा (जिसके बोलनेवाले लगभग 10 करोड़ हैं) भोजपुरी में ही अपना सर्वाधिक प्रसिद्ध गीत 'बटोहिया' लिखा, ताकि हर वर्ग के लोग उसे अपने चिन्तन का विषय बना सके। 'बटोहिया' में उन्होंने सहज ग्राह्य प्रतीकों के माध्यम से देशवासियों का उद्बोधन किया है। वे प्रतीक ऐसे हैं, जो सहज ही लोक-आस्था का केन्द्र बन सकते हैं। विरह, मिलन जैसे जीवन के अनिवार्य अनुभवों से सामान्य जन विचलित हो सकता है, किन्तु एक युगचेता कवि की व्यापक दृष्टि उसमें भी आनन्द के अनिवार्य तत्त्वों को खोज ही लेती है। ऐसे अनुभवों को कवि ने 'बटोहिया' में इस प्रकार बाँधा है-

पवन सुगंध मंद अगर गगनवाँ से,
कामिनी विरह राग गावे रे बटोहिया।
तोता तूती बोले रामा बोले भेंगरजवा से,
पपिहा के पी-पी जिया साले रे बटोहिया

इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि 'बटोहिया' की रचना जनसाधारण के लिए ही की गई थी। रघुवीर बाबू के लिए कविता करना एक साधन था, जिसके माध्यम से वे अपनी बातें जनसाधारण तक पहुँचा सकते थे। यह तथ्य इसमें प्रयुक्त ठेठ ग्राम्य भाषा से भी उजागर हो जाता है। मात्र 'बटोहिया' ही नहीं, उनकी अन्य रचनाएँ भी जनसाधारण के बीच चर्चित होने की क्षमता रखती हैं।

रघुवीर बाबू की दूसरी लोकप्रिय अमर रचना 'भारत-भवानी' सन् 1942 ई० के असहयोग-आन्दोलन के दौरान बिहार के सभी-सम्मेलनों में मंगलाचरण की तरह गायी जाने लगी। इसके विद्रोहात्मक स्वर से प्रभावित होकर जेल के क्रांतिकारियों ने इसे अपना उत्प्रेरक गीत बना लिया और इसी की धुन पर उनकी बेड़ियाँ, जो उन्हें कैदी की तरह बाँधे थीं, हजारों बार झंकृत हुई थीं। इस क्रम में उल्लेखनीय है कि सन् 1912 ई० में पटना में अखिलभारतीय काँगरेस समिति के महा-अधिवेशन के अवसर पर 'वन्दे मातरम्' के स्थान पर 'भारत-भवानी' ही गायी गयी थी।

'भारत-भवानी' की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है :

गेहूँ धान जाझे काम सरसों विपिन फूले
सुख झूले मड़ई पलानी मेरी जननी।
जेति जै जै पुण्य धाम धर्म की असल भूमि,
जेति जै जै भारत भवानी मेरी जननी।

रघुवीर नारायण ने हिन्दी में भी बहुत सारी रचनाएँ कीं, जिनमें बहुत सारी अप्रकाशित हैं और अब अनुपलब्ध भी। प्रकाशित रचनाओं में 'रघुवीर पत्र-पुष्प', 'रघुवीर रसरंग' है। उनका 'रम्भा' नामक खण्डकाव्य अप्रकाशित ही रह गया। हिन्दी की उनकी कविताएँ भी अनेक प्रकार के छन्दों के सफल प्रयोग के कारण प्रशंसित हुई। उनकी हिन्दी-कविताएँ मध्य और आधुनिक युग के बीच की एक अनिवार्य शृंखला है। लेकिन दुर्भाग्य से हिन्दी-साहित्य के इतिहास में रघुवीर नारायण की चर्चा तक नहीं है। स्वर्गीय रघुवीर नारायण के लोकगीत 'बटोहिया' और 'भारत भवानी' के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि पुनर्जागरण के उस युग में अखिलभारतीय स्तर पर राष्ट्रीय चेतना के साथ लोकजीवन के परिष्कार की जो लहर उठी थी, उसमें बिहार और पूर्वी भारत के एक प्रखरतम और जीवन्त कवि के रूप में उन्होंने स्वयं को प्रतिष्ठित किया था। चूँकि सामाजिक और धार्मिक रूढ़ि से ग्रस्त युग-चेतना को एक लक्ष्य की ओर उन्मुख करना जरूरी था, इसलिए इसमें आध्यात्मिक उदात्तीकरण की भावना भरना आवश्यक समझा गया। उस भावना से प्रेरित होकर 'रघुवीर रसरंग' और 'रघुवीर पत्र-पुष्प' की रचना हुई।

उल्लेखनीय है कि है प्रसिद्ध महात्मा रूपकलाजी महाराज की असीम कृपा और उनके वैष्णव-ग्रंथ 'भक्तमाल' आदि से प्रभावित होकर रघुवीर नारायण साहित्य-क्षेत्र की ओर प्रवृत्त हुए थे, तथापि उनकी प्रवृत्ति मूलत: आध्यात्मिक थी। परमपूज्य श्रीरूपकलाजी की प्रेरणा से ही रघुवीर बाबू ने तन्मयता और भक्ति भाव से पूर्ण अनेकानेक भक्ति-गीत, भजन और संकीर्त्तन-साहित्य की भी रचना की । आज भी रघुवीर नारायण द्वारा रचित अनेक भजन अयोध्या और उत्तर भारत के अनेक मन्दिरों में गाये जाते हैं।

श्री रघुवीर नारायण को बनैली राज (पूर्णिया) के अधीस्वर महाराजा श्रीकीर्त्यानन्द सिंहजी ने अपना निजी सचिव नियुक्त किया था, जहाँ वह लगभग बीस वर्षों तक रहे। किन्तु सचिव से अधिक वह राजा साहब के परम मित्र, प्रियपात्र और मार्गदर्शक थे। एक यशस्वी साहित्यसेवी होने के नाते राजा बहादुर ने जीवन भर उन्हें बड़ा सम्मान दिया। राजा बहादुर से बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-भवन के निर्माण-कार्य हेतु सर्वप्रथम दस हजार रुपये का एकमुश्त अनुदान देने की अनुशंसा रघुवीर नारायण ने ही की थी।

भोजपुरी-लोकगीतों की परम्परा में 'बटोहिया' का स्थान एक क्रोशशिला की तरह है। जनता के हर वर्ग ने 'बटोहिया' का अपूर्व स्वागत किया; क्योंकि राष्ट्रवादी भावनाओं का प्रसार उस युग की आवश्यकता थी। 'बटोहिया' के बाद उसी शैली में रचित श्री मनोरंजनप्रसाद सिंह की 'फिरंगिया' और भिखारी ठाकुर की 'विदेसिया' भी आगे चलकर बहुत लोकप्रिय हुई।

आधुनिक बिहार के प्रथम हिन्दी-कवि स्वर्गीय रघुवीर नारायण साहित्य के सत्साधक थे। वे पूरी निष्ठा से, प्रचार से दूर हरकर, 1 जनवरी,1954 ई० तक अपनी साहित्य-साधना अखण्ड भाव से करते रहे। निस्सन्देह, उनकी कूटस्थ कविता 'बटोहिया' में अनुध्वनित राष्ट्रीय चेतना का स्वर युग-युग तक जनमन को अनुप्राणित करता रहेगा।

◆

www.bhojpurisahityangan.com

बाबू रघुवीर नारायण जी संस्मरण

□ सत्यदेव प्रसाद चौरसिया

किसी व्यक्ति को बहुत दिनों तक याद किये जाने में, उसका कृतित्व तो सहायक होता ही है, लेकिन उसका व्यक्तिव भी बहुत बड़ी भूमिका अदा करता है। किसी व्यक्ति से यदि आप मिलते हैं, तो सर्वप्रथम उसके व्यक्ति का प्रभाव आपको प्रभावित करेगा। उसके पश्चात् उसके कृतित्व।

इस संबंध में पुण्य स्मरणीय स्व० श्री रघुवीर नारायण जी को देखा जाय तो उनकी सख्शियत, व्यक्तित्व ऐसा था कि उन्हें अधिक लम्बा नहीं तो नाटा भी नहीं कहा जा सकता था। साफ-सुथरी धुली-धुलाई धोती एवं ऊपर से कुर्त्ता एवं बन्द-गला कोट पहन कर, सिर पर गोल काली टोपी, हाथ में छड़ी, पैर में ग्लासकेट के जूता पहने प्राय: सुबह में घूमने के लिए निकला करते थे। अहले सुबह जिसे उषा काल कहा जाता है, में रघुवीर बाबू रेलवे लाइन पर इसी भेष-भूषा में प्राय: घूमते नयागाँव रेलवे स्टेशन से लेकर बाजितपुर पुल तक पाये जाते थे। इसके अपवादस्वरूप सन्ध्या में और कभी-कभी सुबह में भी वे छपरा-सोनपुर सड़क से घूमने निकला करते थे। वे जब भी नयागाँव में होते टहलने अवश्य निकला करते थे।

वे देखने में सीधे-सादे सा रहने के बाद भी एक अजब-सी गंभीरता लिए हुए थे। उन्हें देखते ही उनके प्रति यह महसूस होता था कि या तो ये निरंतर कोई जाप करते जा रहे हों या किसी विषय का अपने अन्त में गहराई से चिन्तन कर रहे हों । उनमें एक चिन्तनशील व्यक्तित्व पूर्णरूपेण समाहित था। बात-चीत में बिलकुल स्पष्ट एवं खुला हुआ-सा थे। बहुत ही प्रभावी एवं स्पष्टता के साथ आत्मीयता लिए हुए उनकी बातें हुआ करती थीं।

मेरे परिवार से खासकर मेरे पिता मधुनी भगत जी एवं मेरे जेष्ठ भ्राता स्व० रघुवीर प्रसाद जी से उनका बड़ा ही स्नेहिल संबंध था। मेरे पिता जी तो उन्हें मालिक ही कहा करते थे। रघुवीर बाबू जब भी सड़क होकर घूमने निकलते एवं मेरे पिता जी अपने बथान में होते तो वे रुककर उनसे बड़ी ही आत्मीयता के साथ बातें करते यदा-कदा तुलसीकृत रामायण पर भी चर्चा हो जाया करती थी।

एक दिन की बात है। सुबह-सुबह सड़क होकर पूरब की ओर होकर लौट रहे थे। मेरे पिता जी को उन्होंने हाथ से इशारा करके अपने पास बुलाकर कहा कि आज संध्या में चवर में नौका-विहार के लिए चलना है। बाबू सागर सिंह जी को भी इस संबंध में कह दिया हूँ। वे राजी भी हो गये हैं। उस समय मैं चौथा या पाँचवाँ का विद्यार्थी था। बाबू सागर सिंह के परिवार एवं मेरे परिवार में तो पारिवारिक सम्बन्ध-सा था। मैं उन्हें 'बाबा' [illegible] था।

बाबू सागर [illegible] में ही मेरे बथान में आ गये। लगभग साढ़े चार बजे शाम में बाबू सागर सिंह एवं मेरे पिता जी जाने लगे तो मैं उनके साथ चलने के लिए बाल-सुलभ हठ कर दिया। बाबू सागर सिंह मुझे भी अपने साथ ले लिए। हमलोग पहुँचे रसुलपुर ढाला कि उधर से बाबू रघुवीर नारायण जी आ गये।

एक नाववाले को बुलाया गया। नाव उत्तर की ओर बढ़ चली। नाव क्रमश: पूर्वाहत होने लगी और बिझारी में पहुँचने के बाद नाव पूरब की ओर बढ़ रही था। आसिन का महीना, धान कोकहाँतक और उत्तर में आल की ओर भी था। बीच में बिझारी नाला से कुछ दूर दक्षिण एवं कुछ दूर उत्तर तक धान नहीं केवल पानी ही पानी था।

नाव बढ़ रही थी और तीनों आदमी रामायण पर आपस में चर्चा करते जा रहे थे। इस नौका-विहार के रूप में केवल रामायण ही चर्चा में रही। मेरे पिता जी स्कूल में तो नहीं पढ़े थे, फिर भी बड़े ही अध्ययनशील आदमी वे थे। जहाँ तक मुझे विश्वास है, मेरे पिता जी को तुलसीकृत रामायण, गीता अन्वय एवं अर्थ के साथ एवं वेदान्त बिलकुल कंठाग्र था। नहीं पढ़ने के बाद भी वे इलाका में रामायण के मर्मज्ञ समझे जाते थे। वे जब भी घर पर होते प्राय: रामायण आदि पढ़ते रहते थे।

नाव लौटती में थी कि नाविक हठात् बोल उठा, ''मालिक, अपने लोग तो नाव में चढ़ली तबही से रामायण आउर वेद के चर्चा करइत रहलीं। हम तो बिना पढ़ल-लिखल गँवार हँई। अपने लोग हमरा के हमर एगो शंका दूर कऽदेल जाव, एकें बुरा न मानी मालिक।'' सभी नाविक की बात सुन रहे थे। आपस की बातें बन्द हो गईं ''नाविक अपन बात आगे बढ़वइत कहलक: ''बिप्र रूप धरि बचन सुनावा। सुनत विभीषण उही तहँ आवा'' मालिक, हनुमान जी विभीषण से कउन बात कँहलीं कि आ गईलन?

मेरे पिता जी सागर सिंह जी एवं बाबू रघुवीर नारायण जी कुछ देर के लिए मौन धारण कर लिए लेकिन रघुवीर

.....शेष पृष्ठ 18 पर

www.bhojpurisahityangan.com

एक संस्मरण

□ श्यामदेव प्रसाद

जन्म लेना, जीवन यापन करना और अंत में मृत्यु को प्राप्त हो जाना प्रत्येक जीव का धर्म है। परन्तु कुछ विशेष लोग होते हैं जिनका जीवन लोक कल्याण एवं राष्ट्र-सम्मान को समर्पित रहता है। ऐसे ही महापुरुषों में एक थे रघुवीर नारायण (उन्हें बाबा कहते थे) बिहार के सारण जिला के गंगा किनारे एक गाँव है जो अति प्राचीन होते हुये भी 'नया गाँव' नाम से प्रसिद्ध है। रघुवीर बाबा का मकान मेरे मकान से करीब तीन सौ गज की दूरी पर गंगान्तर पर स्थित था। आज कटाव के कारण उनका वह मकान गंगा के गर्भ में विलीन हो गया है। उनके घर पर जाने का रास्ता मेरे घर के सामने था।

उस वक्त उस मकान में उनके बड़े सुपुत्र स्व० काशी बाबू सपरिवार रहा करते थे। रघुवीर बाबा यदा-कदा दो-चार दिनों के लिये वहां आया करते थे। गाँव के लोग उन्हें बहुत ही सम्मान देते थे। जब वे नया गाँव में होते थे तब सुबह-शाम लोग उनके पास जाकर बैठते थे तथा उनसे बातचीत कर अपने को गौरवान्वित महसूस करते थे। कुशल-क्षेम पूछने के पश्चात् वे लोगों को देश-विदेश की खबरों से अवगत कराते थे।। उस वक्त दूरदर्शन की कौन कहे, रेडियो भी गाँव में उपलब्ध नहीं था। अखबार भी विरले ही कोई सज्जन मंगाते थे। इसलिये अधिकांश लोग देश-दुनिया की खबरों से बेखबर ही रहते थे। वे भारत एवं इसके ऐतिहासिक तथा पौराणिक धरोहरों के बारे में लोगों से बड़े ही रोचक ढंग से बताया करते थे। वे कहते थे कि अपना देश बहुत ही जीवंत है, जिसमें प्रकृति ने अपना सारा लाड़-प्यार उड़ेल कर रख दिया है। दुनिया में बहुत कम ही देश है जिन्हें भारत जितनी प्राकृतिक संपन्नता एवं भौगोलिक तथा सामाजिक विभिन्नता एवं राष्ट्रीय एकता प्राप्त है। इसी भावना का इजहार उन्होंने 'बटोहिया' में किया है जो भोजपुरी साहित्य की धरोहर है। कभी-कभी वे 'बटोहिया' के कुछ पद गुनगुना कर सुनाते थे। (उन्होंने रामायण के कुछ अंश का पद्यमय अनुवाद भी किया था। उनकी एक पुस्तक थी जिसमें 'कन्सर्ट (Concert) शीर्षक से एक कविता (Poem) थी। इसमें राम-सीता के प्रेमालाप का सजीव चित्रण किया गया था।

आज करीब पचास वर्ष बाद भी वे मेरे मानस-पटल पर विराजमान हैं। सामान्य कद, दुबला एवं आगे की ओर कुछ झुका हुआ शरीर, पतले नुकीले होंठ, दाहनी ओर थोड़ा झुके हुए, सर पर कुछ खिचड़ी बाल, कांपते हुए हाथ और सर (संभवत: वे पारकिंसनस डिजीज से पीड़ित थे।) परिधान में धोती और काला लौंग कोट, मोजा एवं फीता बंधी जूता तथा सर पर गोल काली टोपी। यही थी उनकी बाहरी पहचान। जब वे बोलते थे तब उनके होंठ कुछ-कुछ गोलाकार हो जाते थे।

वे एक अनुभवी होमियोपैथ भी थे। वे कहते थे कि मेरी दवा खाकर जब कोई व्यक्ति चंगा हो जाता है तब मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। वे दवा का दाम या फीस नहीं लेते थे। उनकी दवा बहुत कारगर सिद्ध होती थी। उनके पास चमड़े का एक होमियोपैथिक काला बैग या जिसमें पचास-साठ शीशियां रखी रहती थीं और उसी के से वे लोगों को दवा दिया करते थे। हाथ कांपने के कारण शीशी से पुड़िया में दवा की गोली ढालने में कुछ कठिनाई होती थी। मैं भी यदा-कदा अपनी दादी के लिये उनसे दवा मांग कर लाता था।

कवि-हृदय, सादा-जीवन, उच्च विचार के धनी रघुवीर बाबू यद्यपि वर्षों पूर्व काल कवलित हो गये, परन्तु अपने देश-प्रेम, जन-सेवा एवं साहित्य साधना के लिये वे नया गाँव एवं भारतवासियों के हृदय में सर्वदा जीवित रहेंगे। ◆

पृष्ठ 17 का शेष.....

बाबू खोजी निगाह से इधर-उधर देख रहे थे कि एक नाव पर कुछ लोग बैठे पूरब की ओर जा रहे थे। बाबू रघुवीर नारायण जी ने उन्हें पुकारा, "के बा होऽऽ सुनत" और वे लोग नाव लिए हम लोगों के पास आ ही रहे थे कि रघुवीर बाबू नाविक का नाम लेकर बोले "आयेल समझ में?" कैसा सटिक एवं साफ शंका- समाधान था उनका!

अब लगे एक और संस्मरण आप पाठकों के समक्ष रखना चाहूँगा। कालक्रम से बढ़ते हुए मैं गोगल सिंह उच्च विद्यालय के दशम वर्ग का विद्यार्थी था। मैं विद्यार्थी तो बहुत अच्छा नहीं था लेकिन मुखर अवश्य था। हमारे आदरणीय शिक्षक श्री भोलेश्वर नारायण सिंह के सम्पादकत्व में विद्यालय के लिए एक पत्रिका का निकालना तय किया गया। विद्यार्थियों एवं शिक्षकवर्ग से पत्रिका के लिए उनकी रचनाएँ आमंत्रित की गईं। रचनाएँ सम्पादकमंडल को प्राप्त भी हो गईं। प्रस्तावित पत्रिका का नाम दिया गया "उषा किरण"।

पत्रिका भविष्य के गर्भ से निकलकर वर्त्तमान के धरातल

.....शेष पृष्ठ 25 पर

www.bhojpurisahityangan.com

बोले माटी सारन के

□ प्रो० बच्चू पांडेय

त्याग-तपस्या से भीजल
माटी जहँवा के चंदन बा
जग का आँगन में बिहँसत
महिमा मंडित ई नंदन बा
जेकरा गरिमा से पनकल
इतिहास, धरोहर युग-जग के
सारन का धरती मइया के
नित सौ-सौ अभिनन्दन बा।

धरम-करम के धनी, त्याग-बलिदान के अगुआ, मरदाही के सबूत, 'कलम के सिपाही', शौर्य-उत्साह के प्रतीक, आन-बान के रछेआ खातिर सिर हथेली पर लेके तइयार रहेवाला जवान, "भर बाँह चूड़ी ना त फट से राँड़" वाला कहाउत के उजागर करेवाला, सबकर सनेही, भोजपुरी भाषा के नेही, दिल दरिआव मन बादशाह, शंकार लेखा फक्कड़, बंदा वैरागी लेखा अक्खड़, कुँअर सिंह का तेरूआर नियर चोख, भगत सिंह आ चन्द्रशेखर आजाद जइसन सींख, हिमालय अइसन अडिग, गंगा नीयर निरमल, भगीरथ जइसन धीरजवाला, अंगद जइसन टेक के पक्का, दधीचि अइसन बलिदानी, गौतम के गेआन जइसन तेज बसंत अइसन मादक आ जेठ जइसन अगिया बैताल सारन के माटी के महिमा कुबेर का खजाना में भी ना समेटाई । छितराइल आखर के बाँह में एकरा के घेरल कठिन काम बा।

सारन के लोग के दिल सकंत नइखे। ईहाँ के लोग मन के मइल ना होखे। इहँवा खुलल खेल फरूखाबादी चलेला। अधिकतर आबादी गाँव-गँवई में समेटाइल बा। रख-रखाव आ चमक-दमक से दूर, सादगी का बाना में फरिछ दिमाग के सांच से भरल, ईहाँ के लोग अपना फकीरी में भी मस्त होके रहंके जानेला। गंगा, गंडक आ सरयू जइसन पवित्र नदियन का बाँह में घेराइल सारन प्रकृति के सुंदर उपहार लेखा शोभनउक आ देखनउक बा। लगभग 2683 वर्गमील में फइलल सारन प्रमंडल इतिहास का आँगन में छोटहन बाकिर असरदार भूगोल लेके मुसका रहल बा।

इतिहास का निगाह में सारन के धरती पहिले मल्ल देश के अंग रहे। बुद्ध का समय में गंडक के नाम 'मही' रहे। आजुओ मढ़ौरा से सोनपुर आ शीतलपुर तक बहेवाली नदी के नाम मही बा। पहिले एह मही नदी के पुरवारी भाग वृज्जिसंघ में शामिल रहे। छठवीं आ सतवी सदी में सारन कन्नौज का अधीन रहे। मुसलमानी शासनकाल में एह इलाका के मुख्यालय सारन नामक गाँव में रहे। लगभग अठारहवीं सदी तक इहँवा मुसलमानी शासन फइलल रहे। 1765 में जब अँगरेजन के नजर सारन पर पड़ल त इहँवा के वीर सपूत फतेसाही अँगरेजन के ललकार के दुतकरलन। इहे के वंशज हथुआ के राजघराना के लोग ह। एकरा पहिले तेरहवीं सदी में तुरकन से लोहा लेवे में अमनउर के चौहानन के तेरूआर चमकल रहे। मुगलकाल में "आइने अकबरी" का हिसाब से सारन में दसगो गाँव आ इगारेगो महाल शामिल रहे। 1766 में अँगरेजी हुकूमत "सरकार सारन" का रूप में एकर सीमा तय कइलस। एहमें चंपारन भी शामिल रहे। 1775 में सारन के फतेसाही अँगरेजन के सरिआ के चहेटलन। अँगरेजी हुकूमत के खिलाफत के ई पहिलका बिगुल रहे। सारन गजेटियर के विद्वान लेखक पी.सी. राय चौधरी का हिसाब से फतेसाही सारन के कुँअर सिंह रहस, जेकर ललकार अँगरेजन का दिल में खउफ भर देलस। अइसनका वीर पुरुष के प्रेरणाभरल मरदाही के इतिहास के अपना अंचरा में सँजो-सहेज के राखेवाला सारन के धरती अभिनन्दन आ पूजा के अधिकारी बा।

आरण्यक संस्कृति के पुरोधा सारन "सादा जीवन आ ऊँच विचार" में विश्वास रखेला। भूखे पेट रहिके भी संस्कृति के सींचे वाला सारन के धरती पर न्यायशास्त्र के जनक गौतम के जनम भइल। आजुओ गोदना में उहाँका आश्रम के निशानी मौजूद बा। अपना हड्डी के दान देके देवता लोगिन के रछेआ करे वाला महर्षि दधीचि छपरा नगर के दहिआवाँ के सपूत रहलन। चिरान के महादानी मोरध्वज के कहानी, दानवीर कर्ण से इचिको घाट नइखे। संत महात्मा लोगन के ईहाँ लमहर परम्परा रहल बा। मांझी के धरनीदासजी, स्वामी रूपकलाजी, भक्त रामादासजी खाली संते ना रही- इहाँसभनके भक्ति आ साधना के जिअतार रचना आजुओ हिन्दी आ भोजपुरी कविता के सिंगार बा। एही क्रम में लछमी सखीजी आ कामता सखीजी के भी योगदान बा। परमहंस रामकृष्ण के अनन्य शिष्य अद्भुदानंदजी उर्फ लाटू महाराज, रामनिरंजन स्वामी, अद्वैतानंदजी महाराज जइसन संतन के बानी आ उपदेश सारन का कण-कण में रचल-बसल बा। शांति आ अहिंसा के जवन संस्कार सारन में बा, ऊ सब एही संतन के उपदेश के प्रभाव से बा। आजुओ बाबा सुखदेवदासजी, परमसाध्वी स्व० देवकी माताजी के अनवरत साधना आ परोपकार के कार्यक्रम चल रहल बा। लोकमंगल खातिर

www.bhojpurisahityangan.com

निवेदित-निछावर अइसन संतन के नाम लेला भर से कलिमल के हरन हो जाला। पूरा मानवता के अंधकार से अंजोर का ओर ले जाये खातिर सारन के महान संत ज्योतिर्मयानंदजी आ माँ योगशक्ति के पूरा समय अमेरिका में बीत रहल बा। भौतिकता का बीचे अध्यात्म के दियना जरा के योग के प्रचार-प्रसार में लागल-भिड़ल अइसन का विभूतियन के भंडार सारन के धरती धन्य बा।

थवि के जानल-मानल भगवती मंदिर, मैरवाँ में हरेराम ब्रह्म के स्थान, मेहदार के महेन्द्रनाथ मंदिर, आमी में सिद्धपीठ का रूप में स्थित अंबिका भवानी के मंदिर, सोनपुर के शैव आ वैष्णव मत के मिलन के पुनीत धाम, आ संगे-संगे धर्मनाथ मंदिर से हाथ मिलावत पीर बाबा के मजार हिन्दू आ मुसलमान के परेम आ गलबाँही के सबूत बनिके सारन के संस्कृति के उजागर करि रहल बा। इहे कारन बा कि ईहँवा के लोग छल-प्रपंच आ लागलपेट से दूर हटिके अपना करतब में विश्वास राखेला। ईहाँ का माटी के ई खूबी वा कि ईहँवाँ लोगन के दिल में भेद के देवाल नइखे।

सारन के लोग चाहे बर्मा में होखे चाहे सिंगापुर में, त्रिनिदाद में जमल होखे भा फीजी में बिहरत होखे, सूरीनाम में चहकत होखे भा मारीशस में प्रतिभा के अलख जगवले होखे-इहाँ लोग चाहे जहाँ रहे बाकिर आजुओ अपना भासा आ परंपरागत रसम रेवाज के जोगा के रखले बा। आज भी सादी-बिआह में जब मारिशस में ''गाई का गोबरे महादेव चउका पुराई'' के गीत गूँजेला तब घर का अंगनई में छछात भारत उतर जाला। जब भी पुरवा आ पछेया बहेला-अपना जनमभुइया के सनेस के पाती भेटा जाला। भारत के माटी के गंध आजुओ मन में हुलास भर जाला। खास करके भोजपुरिया भाई सभन का बीचे जात-पाँत आ मजहब के कवनो देवाल ना रहे। विदेश में निखालिस ''छपरहिया'' आ बेवाक भोजपुरिया के पहचान बच जाला। महुआ के गंध आजुओ मन के मता देला आ अमराई में कोइल के कूक मन में बसंत के उमग-उछाह के लहर भर देला। हमरा जानपहचान के मारीशस में रहे वाला एगो भाई जब छपरा घूमे अइलन त ऊ बेकहले ''अंगुरी में डँसले बा नगिनिया'' के गुनगुनाके भोजपुरी के महान कवि महेन्द्र मिश्र जी के इयाद के ताजा करि दिहलन। अतिथि-सत्कार में अनचिन्हारो के चिन्हार नीयर बूझेवाला, महँगी के बहँगी कान्हा पर ढोअलो का बावजूद चेहरा पर मुसकान लेके जिनगी का उलझन से जूझेवाला सारन के लोग जवना जिअतार इतिहास के रचले बा, आ रच रहल बा-ओहसे सउँसे भारत का एक दिन प्रेरणा लेवे के पड़ी। एकता, सद्भाव, त्याग आ देश प्रेम का त्रिवेणी में नहाइल सारन के लोग देश का आगे एगो बानगी पेश कइले बा। सारन के अमर सपूत आ भोजपुरी के महान कवि बाबू रघुवीर नारायण के कविता 'बटोहिया' का गूँज में सउँसे भारत के संस्कृति आ इतिहास उजागर बा। अइसन जिअतार ढंग से भारत के इतिहास-भूगोल के संस्कृति का पसरल बाँह में समेट के अपना जनमभुँइया के कविता के सदानीरा धारा के अरघ चढ़ावेवाला रचना दोसरा भासा में बहुते कम भेटाई।

भला अइसनका सारन का धरती से केकरा मोह ना होई। सारन अपना लघुता में पूरा भारत के प्रभुता के समेटले बा। कहाँ ले गिनाई ?

''माटी का कन-कन में जहँवा, बा अतीत के गाथा
अइसन पावन धरती के, सब लोग झुकावे माथा''

जइसन माटी तइसने लोग। नयका जमाना के नखरा, चोन्हा आ छाव से दूर, आडंबर आ देखावा का तामझाम से अलग-थलग, साफ-सूथर जमीन पर पनकल सहजता का अभरन से दमकत-झमकत सारन के लोगिन के मिजाज फगुआ का करेजगर राग लेखा दमगर आ बसंत के बउराइल बेआर लेखा मनगर बा। ईहाँ के लोग सबका के अंगेछ के चलेवाला बा। भोजपुरिया मन चौबीस कैरेट के सोना हवे-

''मजहब के माया ना बान्हे, जात-पात ना छाने
मानवता का आगे दोसरा, बंधन ना ई माने''

देश पर जब भी आफत आइल बा, सारन के सपूतन के तरूनाई आगे बढ़िके बिपदा के अन्हरिया के खुसहाली का इंजोरिया में बदल देले बा। इतिहास गवाह बा कि बाबू कुँअर सिंह अँगरेजन से लोहा लेवे खातिर जब सरयू के पार करिके आगे बढ़लन त सारन के जवानी खनखना उठल। आपन भरपूर मदद देके सारन के लोग बाबू कुँअर सिंह का अभियान के संघतिया बनल। तब से लेके 1942 तक लगातार अँगरेजन से सारन के लोग लोहा लेते रह गइल। हिअवगर आ करेजगर स्वतंत्रता सेनानियन के ईहाँ एगो लमहर कतार खड़ा हो गइल। आजादी के लड़ाई के इतिहास के एगो दमगर अध्याय का रूप में सारन के सपूतन के बलिदान के कहानी बा जवना के अबही ले ठीक से नइखे लिखल-पढ़ल गइल-

''हाथे बा लाठी, करेज शेर-बब्बर के
हुमकत हिआव, मरदाही के बाना बा
देश-प्रेम के उमंग, छउकत बा अंग-अंग
सारन के लोग सभे बाँका मरदाना बा''।

स्वतंत्रता का आंदोलन में एकरा मरदाही के पोख्ता सबूत पावल जा सकेला। एक बात पर विशेष ध्यान देवे के बा कि छपरा आ सारन प्रमंडल के लोग 1916 से ही आजादी के लड़ाई में आपन भागीदारी राखल। एह समय का लड़ाई में

www.bhojpurisahityangan.com

मौलाना मजहरुल हक, ब्रजकिशोर बाबू, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद आ शंभू बाबू के सार्थक योगदान रहे। गाँधीजी का चंपारन-यात्रा में भी ईहाँ सभन साथ दिहली। साथे-साथे बाबू चन्द्रदेव नारायण, माधो सिंह आ विंदेश्वरी बाबू वकील अउरी रामरक्षा ब्रह्मचारी के मोतीहारी यात्रा भइल। 1918 में गाँधीजी छपरा अइनी। 1919 में रौलट एक्ट का खिलाफ सारन में अनगिनत सभा भइल। असहयोग आंदोलन का समय छपरा में भरत मिश्र आ माधो सिंह जी के गिरफ्तारी भइल। 1923-24 में स्वराज्य दल बनल जेकर अध्यक्ष भइली श्री नारायण बाबू आ मंत्री चुनइनी श्री हरिनंदन सहाय जी। 1929 से 31 का बीच जे लोग आजादी के लड़ाई में विशेष रूप से योगदान कइल, ओकरा बारे में बहुत कम लिखाइल बा। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना मजहरुल हक, नारायण बाबू, माधो सिंह, डॉ० शैयद महमूद, जगलाल चौधरी पं० भरत मिश्र, ब्रजकिशोर बाबू का पाछे-पाछे बलिदानियन के एगो लमहर टोली रहे। बाबू प्रभुनाथ सिंह रामविनोद सिंह, पं० गिरीश तिवारी, महेन्द्र सिंह, रामराजेश्वर तिवारी (साँवलिया तिवारी), झूलन सिंह, लल्लन पांडेय, सरयूशरण पांडेय, ब्रह्मदेव पांडेय, महावीर पांडेय, वृन्दा उपाध्याय, त्रिभुवननाथ पाठक जइसन लोगन के कम बेस भूमिका रहल। लोकनायक जयप्रकाश के प्रखर चिंतन आ तेआग से प्रभावित होके समाजवादी चेतना भी एही बीच फइलल। क्रान्तिकारी राष्ट्रीयता के लहर में 1931 में फुलवरिया मठ पर जवन हमला भइल ओह में रामभवन सिंह, त्रिभुवन पाठक, कृष्णदेव पांडेय आ रघुनाथ पांडेय जइसन क्रान्तिकारियन के खास भूमिका रहे। 1934 में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी कांग्रेस के अध्यक्ष भइनी आ देश के संकट का घड़ी में राह देखवनी।

1940 के 28 नवंबर के महामाया बाबू सत्याग्रह कइनी। 1942 में अँगरेज लोगन के भारत छोड़े खातिर नारा निकलल। 9 अगस्त के पटना में गोली चलल। एह में सारन के सपूत श्री उमाकांत सिनहा आ राजेन्द्र सिनहा शहीद भइलन। 1942 का सउँसे आंदोलन में जे लोग शहीद भइल ओह में ढेर लोग रहे जवना में श्री श्याम सुंदर लाल, फुलेना प्रसाद श्रीवास्तव, देवशरण सिंह, शुभलाल प्रसाद, भृगुनाथ ठाकुर, किशोर सोनार, चंद्रमा प्रसाद, महेश्वर सिंह, छठ्ठू दर्जी, झगड़ू चमार, सीताराम सिंह, बाबूराम पांडेय, छठू गिरि, नारायण सिंह, हरिनंदन प्रसाद, सोहावीर राम, जयमंगल महतो, रामजीवन सिंह, इंद्रदेव चौधरी, बोधन बढ़ई, रामसेवन राय, रामदेनी सिंह के नाम बा। अइसनका अमर शहीदन का खून का खाद पर उपजल आजादी रह-रह के ओहसभन के बलिदान के इयाद जगा देला।

लोकनायक जयप्रकाश जइसन क्रांन्ति, आजादी आ समाजवाद के जनमदाता सारन के धरती बार-बार प्रणाम के अधिकारी बा। आजादी का लड़ाई में गरमाहट ले आवे के श्रेय जयप्रकाशे बाबू के बा। सारन के जवन सपूत लोग क्रांतिकारी कदम उठाके आजादी खातिर जिनगी के दाँव पर लगावल ओह में "सारन के झाँसी के रानी" अमनउर के बहुरिया श्रीमती रामस्वरुपा देवी के नाम सोनहुला आखर में इतिहास का छाती पर टँकाइल बा। मढ़ौरा कांड का नाम से मशहूर बहुरिआजी का अगुआनी में बाबू बासुदेव सिंह, श्री सुखदेव नारायण मेहता, रामचंद्र राय का सहयोग से छव गो गोरा लोगन के राम नाम सत हो गइल। अइसहीं बरेजा में भी साँवलिया तिवारी का अगुआनी में आजादी के लहर सजोर ढंग से फइलल जवना का चलते ई गीत प्रचलित हो गइल कि **"माँझी थाना बा मरदाना, वीर बनवलन साँवलिया"**। अइसनका लोगन का अलावा भी सारन में आजादी का लड़ाई के सिपाहिअन के एगो लमहर जमात रहल बा। बाबू मानिक-चंद सिंह, लक्ष्मी सिंह, मु० सलीम, परमात्मा सिंह, रामनाथ सिंह, रामचंद्र गाँधी, त्रिभुवन आजाद, राम विलास सिंह, रामनंदन शर्मा, रामानन्द यादव, कपिलदेव त्रिपाठी, रामेश्वर प्रसाद सिंह, रामशेखर प्रसाद सिंह, कमला राय, गोरखनाथ चतुर्वेदी, मुरलीधर पांडेय, प्रभुनाथ तिवारी, शंकरनाथ विद्यार्थी, सूर्य सिंह, गजाधर प्रसाद श्रीवास्तव, रामाधर सिंह, चंद्रगोकुल शर्मा, शिवकुमार पाठक, रामवचन पांडेय, शीतल सिंह, नथुनी सिंह, विश्वम्भर शुक्ल, सियाबिहारी शरण, मु० शब्बीर, यमुना सिंह, कुमार कालिका सिंह, शिवशंकर सिंह, जनकदुलारी, सभापति सिंह, नथुनी सिंह, द्वारिकानाथ तिवारी, अब्दुल गफूर, जब्बार हुसेन, दारोगा राय, हरि माधव प्रसाद सिंह, श्रीमती प्रभावती देवी, श्रीमती शांति देवी, सरस्वती देवी, रामदुलारी सिंह, शारदा देवी, तारा देवी, प्रभा देवी, रामजयपाल सिंह यादव, कपिलदेव प्रसाद श्रीवास्तव, रामाचरण शुक्ल, राजवंशी सिंह, रामानंद मिश्र "विकल", वीरेन्द्र आजाद, नगीना राय शर्मा, राणा तेजबहादुर सिंह, जगन्नाथ मिश्र, बिरजा मिश्र, अमर सिंह, नंद किशोर नारायण लाल, सुदिष्ट सिंह, इंद्रासन तिवारी, महाराज पांडेय, भिखारी राम, गोपाल प्रसाद यादव, रामवृक्ष ब्रह्मचारी, केदारनाथ ब्रह्मचारी, रामयश सिंह, जगन्नाथ प्रसाद, रामदेव सिंह, धर्मनाथ सिंह, गोपालदास, वशिष्ठ सिंह, नागेश्वर प्रसाद, प्रियरंजन, डॉ० के.एन. गोरिल्ला, गुरुवचन राम, रामेश्वर दत्त शर्मा के नाम का अलावा भी छुटल-फटकल बहुते स्वतंत्रता सेनानी लोग बा जेकरा पर सारन के धरती आ इतिहास के अभिमान बा।

छुटल-फटकल जे भी बा आजादी के दीवाना
ओकरा आगे शीश झुकाके मन सबकर हरखाला

www.bhojpurisahityangan.com

जब-जब आफत के बादल के छावे घुप्प अंन्हरिया
बलिदानी लोगन का ओरी नजर सहज उठि जाला।

मरदाही के बानगी देखावे वाला सारन का धरती पर कलम के सिपाहिअन के भी लमहर जमात रहल बा। आजुओ साहित्य आ भासा के सेवा का क्षेत्र में सारन के योगदान कवनो कम नइखे। इतिहास का दरपन से जवना साधक साहित्यकार आ कवि लोग के रूप झिलमिला रहल बा ओह में सोहरवीं सदी के दूगो महान् भक्त कवि के दर्शन हो रहल बा। धरनीदास जी आ शंकर चौबे जी के नाम एह कड़ी में गिनती लायक बा। धरनीदास जी के शब्द प्रकाश, प्रेम प्रकाश अउरी शंकर चौबेजी के रागमाला भक्ति के कइतरफा सरूप के प्रकाशन बा।

एकरा बाद का पीढ़ी में दामोदर सहाय 'कविकिंकर', जीवाराम चौबे, दीवान झब्बूलाल, ब्रह्मदेव नारायण 'ब्रह्म', शिवनाथ दास, हरिचरण दास, हरलवाल आदि कविलोग भी भक्ति रस से भींजल रचना के दान कइल।

''कलम चलाके जे उटकेरल, जिनगी के हलकानी
फरज बनेला कि हमनी सब उनका के पहिचानी''

19वीं सदी में सिसवन के सखावत जी बीर रस में ''कुँअर पचासा'' के रचना कइनी। एही समय में माँझा के श्रीधर साहा जी अउरी पटेढ़ी के बाबू नगनारायण सिंह जी हिंदी में सरस काव्य के रचना कइनी। पंडित रामावतार शर्मा जी का जरिये जहँवा संस्कृत में ''मारुति शतकम्'' जइसन प्रौढ रचना भेंटल, उहँवे हिन्दी साहित्य के निबंधन के भंडार भी भेटल। महापंडित राहुल सांकृत्यायन भोजपुरी में भी ''जपनिया राछस'' लिखनी। बौद्ध दर्शन के त ऊहाँ का त्रिपिटकाचार्य रहीं। हिंदी में ''दर्शन दिग्दर्शन'' ऊहाँ के नामी किताब बा। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी के ''आत्मकथा'' सुघड़ हिंदी के आदर्श नमूना बा। जयप्रकाश जी भी समाजवादी साहित्य के हिंदी में लिखनी आ कुछ नीमन कहानियो लिखनी। आयुर्वेद में महामहोपाध्याय पं० श्यामनारायण चौबे जी अउरी विश्वप्रसिद्ध आयुर्वेदज्ञ डॉ० रामरक्ष पाठक जी हिंदी का माध्यम से लिखनी। डॉ० पाठक के ''काव्य चिकित्सा'' आयुर्वेदिक साहित्य के अनमोल रतन बा। संस्कृत के प्रकांड विद्वान पं० भरत मिश्र जी अउरी ऊहाँ के योग्य शिष्य आचार्य कपिलदेव शर्मा जी हिंदी का माध्यम से संस्कृत के सरल बनावे में काफी योगदान कइनी।

आचार्य शिवपूजन सहाय जी त साहित्य के पुरोधा रहीं। हिंदी गद्य का साथे-साथे ऊहाँका लेखक लोग के भी सँवरनी।

हिन्दी गद्य के आगे बढ़ावे में श्री राजवल्लभ सहाय, पारसनाथ सिंह, पं० जीवानंद शर्मा, गोस्वामी भैरव गिरि, फूलदेव सहाय वर्मा., पं० कार्त्तिकेय चरण मुखोपाध्याय, विश्वनाथ सहाय, साँवलिया बिहारी वर्मा, पं० यमुना प्रसाद त्रिपाठी, पं० मथुरा प्रसाद दीक्षित, योगेन्द्र प्रसाद 'योगी', संतकुमार वर्मा, शिवचंद्र शर्मा, प्राचार्य मनोरंजन, डॉ० बाँके बिहारी मिश्र, डॉ० गोरखनाथ सिंह, ठाकुर अच्युतानंद सिंह, डॉ० विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री, डॉ० राधाकृष्ण शर्मा, जी.पी. श्रीवास्तव, राधाकृष्ण, श्री उपेन्द्रनाथ मिश्र 'मंजुल', श्रीकांत गोविन्द, डॉ० हरि दामोदर, कुमारी सत्यवती, इंदुमती कुमारी के सफल योगदान रहल बा।

'नककेनवाद' आ 'प्रपद्यवाद' के पुरोधा, बहुभाषाविद, प्रखर आलोचक, प्रो० नलिन विलोचन शर्मा जी के आधुनिक हिंदी के साजे-सँवारे में समर्थ योगदान बा। ऊहाँ का कहानी अउरी आलोचना के नया आयाम देले बानी। एही तरे प्रमुख भाषाशास्त्री, हिंदी आ संस्कृत के प्रकांड विद्वान, प्रख्यात नाटककार, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा जी भी हिंदी गद्य के भंडार भरे में कोताही नइखी कइले। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, डॉ० मुरलीधर श्रीवास्तव, डॉ० रामजी पांडेय, डॉ० बजरंग वर्मा, विश्वनाथ सिंह, शिवाजी राव आयदे, प्रो० राजेन्द्र किशोर, डॉ० केदार नाथ लाभ, डॉ० जवाहर सिंह, डॉ० अनिल कुमार पांडेय, डॉ० रामाशीष प्रसाद, डॉ० विनोद कुमार सिंह, प्रो० बच्चू पांडेय, डॉ० विश्वरंजन आदि के भी अपना-अपना समरथ का मोताबिक भाषाशास्त्र, आलोचना, कहानी आ निबंध के सँवारे में योगदान बा।

हिंदी कविता में तोफा राय, धरनीदास, लक्ष्मी सखी से चलल आवत परंपरा में नया तेवर आ रूप-रंग भरे में श्री दामोदर सहाय 'कविकिंकर', प्राचार्य मनोरंजन, प्रो० भुवनेश्वर प्रसाद 'भुवनेश', सियावर शरण, उपेन्द्रनाथ मिश्र 'मंजुल', डॉ० मुरलीधर श्रीवास्तव, आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, हरेन्द्रदेव नारायण, पुण्यदेव नारायण सिंह, श्रीकांत गोविंद, सारंगशास्त्री, आचार्य महेन्द्र शास्त्री, सूर्य कुमार शास्त्री, डॉ० केदारनाथ लाभ, पांडेय कपिल, प्रो० राजेन्द्र किशोर, प्रभाशंकर मिश्र, लक्ष्मण पाठक 'प्रदीप', प्रो० नगेन्द्र कुमार सिंह, प्रो० श्रीकांत मेहरोत्रा 'श्रांत' प्रो० हरिकिशोर पांडेय, प्रो० बच्चू पांडेय, बलवंत सिंह, डॉ० विश्वरंजन, डॉ० रामाशीष प्रसाद, डॉ० रिपुसूदन श्रीवास्तव, पांडेय रामेश्वरी प्रसाद, श्रीमती प्रकाशवती नारायण, अवधेन्द्र देव नारायण, शकुंतला सिन्हा ''करुणा'', शिवदास पांडेय, डॉ० धीरेन्द्र बहादुर चाँद, ओम प्रकाश सिन्हा, रिपुञ्जय 'निशांत', राम किशोर प्रसाद श्रीवास्तव, गोपीवल्लभ सहाय, जनार्दन प्रसाद श्रीवास्तव, ध्रुवनारायण सिंह, प्रो० पद्माकर झा, प्रो० राजगृह सिंह, देवांशु रंजन के रचना के योगदान बा।

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी कविता के साज-सिंगार करेवाला लोगन में बाबा राघोदास, रूपकलाजी, लक्ष्मी सखी, बाबू रघुवीर नारायण, पं० महेन्द्र मिश्र, भिखारी ठाकुर, प्राचार्य मनोरंजन के ऐतिहासिक आ लमहर योगदान बा। बाबू रघुवीर नारायण जी राष्ट्रप्रेम के धारा बहवनी, पं० महेन्द्र मिश्र जी 'पूरबी' के जनम देनी। भिखारी ठाकुर जी भोजपुरी के जनता का बीच ले गइनी आ मनोरंजन बाबू कविता के संस्कार देनी। आचार्य महेन्द्र शास्त्री भोजपुरी कविता के फइलाव देनी आ हरेन्द्रदेव नारायण जी 'कुँवर सिंह महाकाव्य' लिखके एकरा कूवत के उजागर कइनी। एकरा बाद के कवि लोगन में अर्जुन सिंह 'अशांत', अनिरुद्ध आ पांडेय कपिल के योगदान सराहनीय रहल। प्रो० उमाकांत वर्मा, प्रो० सतीश्वर सहाय, मूसाकलीम, लक्ष्मण पाठक 'प्रदीप', शारदा प्रसाद, सिपाही सिंह 'श्रीमंत' के भोजपुरी कविता में पुरहर योगदान भइल। प्रो० हरिकिशोर पांडेय, प्रो० बच्चू पांडेय, डॉ० रिपुसूदन प्रसाद श्रीवास्तव, डॉ० तैयब हुसेन 'पीड़ित', डॉ० विश्वरंजन, डॉ० धीरेन्द्र बहादुर चाँद, अक्षयवर दीक्षित, डॉ० प्रभुनाथ सिंह, ब्रजकिशोर प्रसाद, गोपीवल्लभ सहाय, पांडेय सुरेन्द्र, रघुनाथ चौबे, रिपुञ्जय 'निशांत', सोमेश, जमादार भाई, डॉ० वीरेन्द्र नारायण पांडेय, वैदेही शरण 'बनियापुरी', वैद्यनाथ 'विभाकर', गोपाल मुखर्जी, वीरेन्द्र मिश्र 'अभय', दक्ष निरंजन 'शम्भू', पराग, डॉ० जौहर सफियाबादी के कलम से हर तेवर आ मिजाज के रचना लिखाइल बा आ लिखा रहल बा। भोजपुरी में हास्य-व्यंग्य का कविता में मुँहदुब्बरजी आ ध्रुवनारायण सिंह आ वीरेन्द्र मिश्र के योगदान बा।

भोजपुरी गद्य में पं० रामनाथ पांडेय के उपन्यास "बिंदिया", के ऐतिहासिक महत्व बा। एहसे भोजपुरी गद्य का एगो नया आयाम भेटल। पांडेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह के "घर-टोला-गाँव" आ पांडेय कपिल के "फुलसुघी" से भोजपुरी के उपन्यास के एगो दिशा मिलल। फुलसुघी एगो सफल उपन्यास बा। प्रो० सतीश्वर सहाय के नाटक "माटी के दीया घी के बाती" एगो राह देखवलस। विमलेश जी भी एकाधगो ऐतिहासिक नाटक लिखलन। भोजपुरी गद्य के ठोस रूप देवे खातिर पांडेय कपिल जी सम्मेलन पत्रिका का जरिये बहुते काम कइनी। कथा क्षेत्र में पं० रामनाथ पांडेय, प्रो० पांडेय चंद्र विनोद, अक्षयवर दीक्षित, डॉ० तैयब हुसेन पीड़ित, डॉ० वीरेन्द्र नारायण पांडेय के पुरहर योगदान बा।

अतना सब बा बाकिर ई कहे में हमरा संकोच नइखे कि भोजपुरी खातिर जवन होखे के चाही ऊ सब नइखे होत। जनमतुये में जम्हुआ छुअला जइसन हाल हो गइल बा भोजपुरी के। अबहीं ता भासा के कोरखाँख दुरुस्त करेके बेरा बा। दोसरा भासा सभन का सोझा खड़ा होखे खातिर जवन रूप, रंग, ऊचाई आ गहराई भासा में होखे के चाही, ओकरा खातिर ढेर पेसरम आ लगन के जरूरत बा। अबहिएँ राजनीति, गुटबंदी आ गोड़खिंचाई के झमेला उठ जाई त आगे का होई। जेकरा हाथ में एकर अगुआनी के भार बा ओह के फरिछ मन से सबका के समेट के चले के पड़ी। आपना-पराया देखला से रचना से मूल्यांकन ना होई, अउरी स्तरीय रचना का अभाव में भासा के मूल्यांकन ना होई । लिखाव, खूब लिखाव, बाकिर ठोक-ठेठा के लिखाव।

संस्कृति के सीचे में संगीत के लमहर भूमिका बा। छपरा में रामलीला मठिया पहिले संगीत के केन्द्र रहे। महंथजी खुद संगीत के जानकार आ पारखी रहीं। एह मठिया के उठान के एगो समय रहे, जब ध्रुपद के नामी गवैया उस्ताद अमन खाँ विराजत रहीं। उहाँ का प्रसाद से बाबू लाड़लीशरण, रघुनाथ सिंह काफी कुछ सिखनी। तमकुही के दीपराज, रामराज, तमहुक हुसेन जइसन गवैया लोगन के डेरा छपरा में रहे। एह लोगन के साधना से सुवासित तान के अनुगूंज में आजुओ हथुआ के रामनरेश जी, छपरा के पं० शिवदास गुरु, भगवती प्रसाद सिंह 'शूर' प्रो. भुवनेश्वर प्रसाद 'भूवनेश' उस्ताद हफीज मियाँ, उस्ताद रफीक मियाँ, तौकी बाई, रसूलन बाई, विनोदी बाई के चेहरा अतीत का झरोखा से झाँक जाला। आजुओ ओह परंपरा के गायकी के कंठ में संजो के राखे वाली स्वरसाधिका मुरादन बाई हमनी का बीच में बानी।

बाबू गुणराज सिंह के हाता संगीत के पुरनका केन्द्र रहे जहँवा नया-पुरान गवैया लोगन के बराबरे जमघट लागल रहे। अइसही मासूम गंज के जटू पांडेय जी के घर भी गायन-वादन के केन्द्र रहे। स्व० शांती पाण्डेय का सितार में महारत रहे। स्व० मनीन्द्रनाथ चटर्जी आ स्व० फणिभूषण सान्याल जी छपरा में संगीत के काफी बढ़ावा देनी। आजुओ राम प्रकाश मिश्र, अनिता झा, मंहथ उमापति दास, उदय सिंह, डॉ प्रतिमा सहाय, निवेदिता मित्रा, मानसी चटर्जी जइसन साधक लोग कंठ संगीत के जिंदा रखले बा। पखावज वादन में वंशी गिरि, वायलिन में गोपाल मित्र, तबला में जगत सिंह, डॉ. श्रीमती गिरिजा देवी एम. पी. के शोहरत बा।

छपरा में नाटक के भी बड़ा पुरान परंपरा बा। नाटक लेखन में बाबू जगन्नाथ शरण, जी. पी. श्रीवास्तव, आचार्य देवेन्द्र शर्मा के काफी नाम भइल। बादउ का पीढ़ी में मूसाकलीम, प्रो० सतीश्वर सहाय वर्मा, अमियनाथ चटर्जी आ बैकुंठ के नाटक के धूम मचल। पुरनका मंच में 'काली बाड़ी नाट्य समिति' काफी समृद्ध रहल जहाँ डी. एल. राय के लिखल नाटक भइल रहे। बाद में छपरा-क्लब, 'शारदा नाट्य

www.bhojpurisahityangan.com

समिति' अउरी 'एमेच्योर ड्रामेटिक सोसाइटी' बनल। एह क्षेत्र में स्व० महेन्द्र प्रसाद स्व० श्यामदेव नारायण सिन्हा आ स्व० हफीज बाबू के काफी योगदान रहे। छपरा में महेन्द्र मंदिर के स्थापना एकर सबूत बा। एह धारा के जीवंत राखे में श्री कपिल देव श्रीवास्तव, मूसाकलीम, अमियनाथ चटर्जी, प्रो० उदय शंकर रुखैयार, डॉ० अवधेश कुमार वर्मा, डॉ० रसिक बिहारी वर्मा, योगेन्द्र प्रसाद व्याहुत, मु० जकरिया जइसन लोग बधाई के काबिल बा।

छपरा उर्दू भाषा आ साहित्य के विकास में भी आगे रहल बा। पुरनका शायर लोगन में मौलाना अब्दुल्लाह राजी, 'शफा' भगवती प्रसाद 'हमराज', मो. वशीर, 'नस्तर', 'बहशी' अउरी अजहर का शायरी से उर्दू का विकाश के राह मिलल। बाद में जमील मजहरी आ प्रो० इज्तबा हुसेन रिजवी का शायरी से एकरा ऊँचाँई के मंजिल मिलल। तमाम उर्दू शायरी में जमील मजहरी आ प्रो० रिजवी के कलाम आज उदाहरन बन गइल बा। बाबू मदन मोहन सहाय 'मोहन' डॉ. सत्यनारायण 'सत्तन', राजनाथ 'रहबर' के कलाम से भी उर्दू शायरी काफी आगे बढ़ल। बाद का पीढ़ी में नैयर जैदी, कौसर सीवानी, प्रो० हमीद सीवानी, डॉ० मंजूर' नोमानी, जज्ब गोपालपुरी, दक्ष निरंजन 'शम्भू' तंग इनायतपुरी के कलाम से उर्दू के विकास के नया आयाम खुल रहल बा। उर्दू के नया कविता का विकास में मो. मेहदी रिजवी के बड़ा नाम बा।

पत्रकारिता में भी सारन पीछे नइखे रहल। पहिलका दौड़ में डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी, ब्रजकिशोर बाबू आ मुरली बाबू "सर्चलाइट" के सेवा कइनी। मौलाना मजहरुल हक साहेब 'मदर लैन्ड' निकाल के सारन के माथा ऊँचा कइनी। पं० कार्तिक चरण मुखोपाध्याय जी "सारन समाचार" निकलनी। पत्रकारिता का क्षेत्र में बाबू रजावल्लभ सहाय (आज), सीताराम सिंह (आर्यावर्त्त) आ विश्वनाथ सिंह (आर्यावर्त्त) के बहुते नाम भइल। शिवचंद्र शर्मा जी "अछूत" के अउरी आचार्य नलिन विलोचन शर्मा जी "दृष्टिकोण" के संपादन कइनी। पत्रन के यशस्वी संवाददाता के रूप में पं० विश्वनाथ मिश्र (इंडियन नेशन), श्री राधेश्याम सिंह (इंडियननेशन), श्री जगदीश्वरी शरण जी (सर्चलाइट), श्री धीरेन चंद्र सिन्हा (युगांतर आ अमृत बाजार पत्रिका), सतीशचंद्र शर्मा (आज) काफी नाम कमइनी। जगदम महाविद्यालय के प्राचार्य स्व० सुशील कुमार सिंह आर्यावर्त्त आ इण्डियननेशन के संवाददाता का रूप में आपन एगो अलग पहचान बनवले रहीं। श्री शिवजी राव आयदे के बहुआयामी व्यक्तित्व खाली पी.टी. आई. का संवाददाता का रूप में ना सिमटल रहल। उहाँका हिंदु-मुस्लिम एकता के अलख जगावे खातिर 'सेक्यूलर रिपब्लिक' के प्रकाशन भी कइनी। श्री अक्षयवट नाथ तिवारी (हिन्दुस्तान समाचार), श्री केदार नाथ अग्रवाल (आज अउरी आकाशवाणी), पाण्डेय रामेश्वरी प्रसाद (इंडियननेशन) का संवाददाता का रूप में काफी यश अरजले बानीं। श्री शत्रुघ्न तिवारी, पृथ्वीनाथ तिवारी (सारन संदेश), श्री मुरलीधर पांडेय (यात्री), श्री हरिशंकर उपाध्याय (अधिकार), बाबू ईश्वर शरण (शिक्षक), कुमार कालिका सिंह (आदर्श किसान), अखौरी शिवनारायण प्रसाद (बिहार टाइम्स)का प्रकाशक आ संपादक का रूप में हमेशा चर्चित रहब। श्री सतीश्वर सहाय वर्मा श्री बच्चू पाण्डेय, डॉ० विश्वरंजन अउरी श्री विश्वनाथ प्रसाद के नाम "माटी के बोली" का संपादक का रूप में एगो इतिहास रही। सूर्यदेव पाठक 'पराग' के "बिगुल" साँचहूँ बाज रहल बा। भोजपुरी के बाल पत्रिका 'नौनिहाल' संपादक : अर्द्धेन्दु भूषण) अपना आप में एगो मिसाल बा। प्राचार्य सुशील कुमार सिंह, प्रो० ए. के. वर्मा, डॉ० त्रिभुवन नारायण सिंह, सरयू शास्त्री जइसन सम्मानित पत्रकार क्रमशः इण्डियन नेशन, यू. एन. आइ, प्रदीप आ आर्यावर्त्त के बहुते सेवा कइल। श्री मुजफ्फर हुसेन, सुरेन्द्र प्रसाद चौरसिया जइसन नयका पत्रकार लोगन से लमहर आसा बा।

महाबली सूचित सिंह, रुस्तमें हिन्द वंशी सिंह आ हाजी अदालत जइसन पहलवानन के जनमभुइँया खेलकूद में भी पाछे नइखे रहल। 1929 से एकर सफल परंपरा बा। ओह घड़ी फूटबॉल काफी प्रचलित रहे। ओह समय के मशहूर खेलाड़ी रहस-जब्बार हुसेन, ठाकुर सूरज सिंह, वृजेन्द्र देव नारायण, राघवेन्द्र देव नारायण, अमर सिंह, कुमार पशुपति सिंह, मु. हनीफ, ईसा खाँ अउरी नकछेदी। 1936 में छपरा टाउन क्लब 'लाहिड़ी शील्ड' जितलस।

हॉकी के परंपरा भी पुरान बा। हॉकी के जानल-मानल खेलाड़ी रहलन-नागेन्द्र बहादुर चाँद, कमला प्रसाद, लक्ष्मी प्रसाद, दीनबंधु सिंह, शंकर प्रसाद आ बिंदेश्वरी प्रसाद। टीम के मैनेजर रहलन श्री प्रशांत घोष। 1949 में दहिआवाँ क्लब "दुर्गा देवी शील्ड" जितलस। एकर खेलाड़ी रहलन-एरिक, सुलेमान, नगीना प्रसाद, बैजनाथ सिंह, दीनबंधु सिंह, मेंहदी हुसेन, श्याम बिहारी आ कपिलदेव।

भोजपुरी के सरधा निवेदन करिके कहे के चाह तानी-

"साध इहे बा होय बढ़न्ती, हरदम एह भासा के
अपना माटी से उपजल, पनकल, लहरल आसा के
खाली कहला से ना होखी, मेहनत करी, निखारी
जतना होखे पहुँच समाइत, ओतने गोड़ पसारी

जय भोजपुरी! जय हिन्द!

(बारहवाँ अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन, छपरा से साभार।)

www.bhojpurisahityangan.com

सारन की साहित्य-साधना में नयागाँव की भूमिका

□ डॉ० रामकिशोर प्र० श्रीवास्तव

पतितपावनी गंगा, सांस्कृतिक सलिला सरयू एवं सादानीरा गंडकी के पावन जल से प्रक्षालित होने वाली सारन की गौरवमयी धरती का एक भूखण्ड नयागाँव भले ही नाम से नया हो इसकी साहित्य-साधना पुरानी है। सारन के जिन साहित्य-साधकों ने साहित्य का दीप जलाया उसमें नयागाँव के साहित्यिकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। हम एक-एक करके उनका परिचय यहाँ देना चाहेंगे।

दीवान झब्बू लाल-

नयागाँव के लाला साहीराम दास के पुत्र झब्बू लाल का जन्म 1750 ई० में हुआ था। इनके पिता दीवानगिरी वृत्ति से ही जीवन-यापन करते थे। पिता के पश्चात् दीवानगिरी का काम इन्हें ही मिला। बेतिया का जो राज्य वीरेश्वरसिंह बहादुर के अधिकार में आया था, उसका श्रेय इन्हीं को दिया जाता है। इनकी प्रतिभा एवं बुद्धि-चातुर्य देखकर महाराज ने स्पष्ट घोषणा की कि यह राज्य मेरी संतानों के लिए और दीवानगिरी का काम आपके वंशधरों के लिए सुरक्षित रहेगा।

इन्होंने अरबी, फारसी, संस्कृत और हिन्दी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। ये हिन्दी काव्य-रचना किया करते थे। आज भी इनकी लिखी होली जनकण्ठ से सुनने को मिलती है।

ब्रह्मदेव नारायण 'ब्रह्म'

'बटोहिया' पूर्वी गीत के अमर-गायक स्व० रघुवीर नारायण के पूर्वज श्री ब्रह्मदेव नारायण 'ब्रह्म' का जन्म 1786 ई० में नयागाँव में हुआ था। इन्होंने सवतंत्र रूप से किसी पुस्तक की रचना नहीं की, परन्तु भक्तियोग सम्बंधी कुछ फुटकर पदों की रचना खड़ीबोली एवं भोजपुरी में की थी। एक उदाहरण द्रष्टव्य है :

कृपा नारायण :

कृपा नारायण जी नयागाँव निवासी ठाकुर संतोष नारायण के पुत्र थे। ये उर्दू-फारसी के उच्च कोटी के विद्वान थे। 'आशिक-गदा' इनकी हिन्दी पद्यात्मक-संग्रह है। जिसमें इस्लाम की दार्शनिकता के साथ-साथ दो प्रेम-विह्वल प्राणों की मर्मस्पर्शिनी कथा है।

इनके एक ही उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि इनमें काव्य-प्रतिभा बहुत प्रबल थी। श्रीकृष्ण को छेड़-छाड़ से तंग आकर श्री राधिका जी कहती हैं :

"औरन को छाड़ि मोहि रोकत हो बार-बार,
कहौं हौं पुकारि भारि रारि मच जायगो।
धाय-धाय आँचल को झोरो झकझोरो ना,
सारी मोरी फाटिहें तो कामरी बिकायगी।।

इस पद में राधिका के हृदय की स्वाभाविकता का वर्णन रीतिकालीन नायिकाओं की अपेक्षा बहुत ही मर्यादित है।

रामविहारी सहाय :

"बिहारी" उपनाम से रचना करने वाले रामविहारी सहाय का जन्म छपरा शहर के दहियावाँ मुहल्ले में सन् 1840 ई० में हुआ था। नयागाँव निवासी मुंशी मनियार सिंह के ये ज्येष्ठ पुत्र थे।

'बिहारी जी' सरकारी सेवा में कार्यरत थे। परन्तु एक बार अकारण सेवा से मुक्त कर दिये गये। खिन्न होकर इन्होंने 'दुर्गास्तोत्र' नामक काव्य ग्रन्थ का प्रणयन किया था। फलस्वरूप पुनः इनकी नियुक्ति हो गयी।

रघुवीर नारायण

रघुवीर नारायणजी का प्रवेश हिन्दी साहित्य में उस समय हुआ जब भारत में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की 'भारत दुर्दशा' और प्रताप नारायण मिश्र की 'हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान' कविता द्वारा जन-मन में राष्ट्रप्रेम के भाव का निर्देश हो रहा था। उर्दू में भी 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' का चारों ओर प्रचार हो रहा था। किन्तु हिन्दी में कोई ऐसी कविता नहीं थी जो सर इकबाल से टक्कर ले सके। अभी गुप्तजी की 'भारत-भारती' भी भविष्य के गर्भ में ही थी। ऐसे ही अन्धकारपूर्ण युग में 'बटोहिया' ने सोई पड़ी जनता में फैलकर उसकी तन्द्रा निद्रा भंग कर दी।

श्री रामनाथ गुप्त ने 'बटोहिया' पर अपनी टिप्पणी देते हुए कहा था: "श्री रघुवीर नारायण प्रणीत 'बटोहिया' गीत इतना अधिक शक्तिशाली, कोमल, करुण, मर्मस्पर्शी एवं प्रभाम्वोत्पादक है कि ऐसा गीत शायद ही किसी भाषा में हो। इस गीत को सुनिए और भारत के यथार्थ दर्शन कीजिए। हृदय मुग्ध होकर रहा जायगा, आँखें आँसू गिराने लगेंगी, प्राणों में एक प्रकार की सन-सनाहट ही सुनाई पड़ने लगेगी और मन

www.bhojpurisahityangan.com

उसकी गति और लय पर हिलोरें लेने लगेगा। ऐसा है यह गीत।''

'बटोहिया' से प्रभावित होकर सन् 1912 ई० में कलकत्ते से देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी ने इस गीत की तुलना सुप्रसिद्ध गीत 'अमार जन्म-भूमि' से करते हुए, इसी छन्द में खड़ीबोली में एक कविता लिखने की प्रार्थना की थी। उसी के बाद कवि ने अपनी 'भारत भवानी' की रचना की।

'बटोहिया' की तरह 'भारत भवानी' कविता भी असहयोग आन्दोलन के पूर्व से ही क्रांतिकारियों के लिए विद्रोही गीत की कड़ी बन गयी थी। जेल के कैदी आधी रात को बंड़िया बजा बजा कर इसे झूमते हुए गाते रहते थे।

'रघुवीर रसरंग' और 'रघुवीर पत्रपुष्प' नामक कवि की रचनाएँ 1905-6 में ही प्रकाशित हो चुकी थीं जिनकी सरल गतिमयतापूर्ण भावुक पक्तियों को लोग घर-घर गुनगुनाते रहते थे।

हरेन्द्रदेव नारायण :

रघुवीर नारायण के सुपुत्र हरेन्द्रदेव नारायण (हरिजी के प्यारे नाम से अभिज्ञात) हिन्दी के सशक्त कवि होने के साथ ही सफल कथाकार, चिंतनपूर्ण निबन्ध-लेखक और गम्भीर समालोचक भी थे। वे हिन्दी के ही नहीं अंग्रेजी के प्रकांड विद्वान थे। उन्होंने हिन्दी की कविताओं का अंग्रेजी काव्यानुवाद सफलता के साथ किया है।

हरिजी आधुनिक हिन्दी-काव्य गगन में उदित एक ऐसे नक्षत्र का नाम है, जिसकी दमक में अपनी दीप्ति प्रकम्पन में अपनी गति है। जिसका उदय छायावाद-युग की अस्तावस्था में हुआ और जिसने अपनी पीढ़ी के मनोमथन से 'नवलेखन' की पीढ़ी को जन्म दिया।

सन् 1933-34 से जीवन के अन्तिम क्षण तक हरिजी एक भाव से अनवरत साहित्य सृजन करते रहे। इनके सम्बंध में विशेषज्ञ उल्लेखनीय बात यह है कि करोड़ों भोजपुरी भाषियों के साहित्य में महाकाव्य-रचना परम्परा के प्रवर्त्तन का ऐतिहासिक श्रेय, भगवान ने उन्हें ही दिया है। 'कुँवर सिंह' महाकाव्य, भोजपुरी भाषा का आदि महाकाव्य है।

प्रकाशवती नारायण :

हरिजी की पत्नी प्रकाशवती नारायण 1939 से लेकर आजतक हिन्दी साहित्य की सेवा करती आ रही हैं। इन्होंने मुख्य रूप से गीतों की रचना की है। इनके गीतों में कोमल भावनाओं का स्पन्दन, सूक्ष्म चित्रमयता और कल्पना का प्रसाद मिलता है।

अवधेन्द्र देव नारायण:

नयागाँव निवासी अवधेन्द्रदेव नारायण सैकड़ों सशक्त गीतों की रचना की है। ''आत्मसुरा'' शीर्षक कविता में जीवन की परिभाषा का सत्य कवि की नवीन कल्पना है। इनके गीत नवीन भावनाओं को सामने रखते हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि सारन के जिन संतों एवं साहित्य सेवियों ने अपनी प्रतिभा को दीपशिखा जलाकर आनेवाली पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त किया उनमें नयागाँव के साहित्य-साधकों का अपना विशिष्ट महत्त्व है। ◆

पृष्ठ 17 का शेष.....

पर आने वाली थी। पत्रिका छपकर तैयार थी केवल मुखपृष्ठ की छपाई बाकी थी। लोगों का विचार हुआ कि डॉ० वासुदेव नारायण से आशीर्वाद स्वरूप पत्रिका के लिए उनकी कोई रचना ली जाय जो मुखपृष्ठ पर हो। डॉ० वासुदेव नारायण उस समय प्रिन्स ऑफ वेल्स मेडिकल कॉलेज, पटना के प्राचार्य थे। किसी ने इसी ऐन वक्त पर सलाह दी कि बासुदेव बाबू की रचना तो छोटी नहीं बड़ी हो सकती है और पत्रिका छप चुकी है। अन्ततः निर्णय हुआ रघुवीर बाबू अभी नयागाँव में उपलब्ध हैं। क्यों न उनसे ही कुछ लिया जाये जो विद्यार्थियों के लायक एवं प्रेरणादायक भी हो।

हमारे आदरणीय शिक्षक एवं ''उषा-किरण'' के सम्पादक श्री भोलेश्वर नारायण सिंह कुछ विद्यार्थियों के साथ बाबू रघुवीर नारायण जी से आशीर्वाद प्राप्त करने उनके 'बड़का दुरा' पहुँचे। उनका घर इस इलाका में 'बड़का' दुरा के नाम से ही सम्बोधित होता था। क्यों न हो, नयागाँव के इतिहास से बड़कादुरा (बड़का द्वार) के इतिहास को निकाल दिया जाये तो नयागाँव का इतिहास शून्य नहीं तो एक शून्यता अवश्य आ जायेगी।

उस समय श्री रघुवीर बाबू बाहर बरामदे पर एक पुरानी कुर्सी पर धोती एवं गोल गला की गंजी पहने आराम की मुद्रा में बैठे हुए थे। उनके सामने प्रस्ताव निवेदित किया गया। कुछ सकारात्मक उत्तर के पूर्व सभी विद्यार्थियों से परिचय पूछा गया। मेरी पारी आई, मैं अपना परिचय अपने पिता जी के नाम के साथ दिया। उन्होंने तत्क्षण कहा, 'हाँ, उस साल नौका-विहार में भगत जी के साथ तुम ही था?' मैंने स्वीकृति में मात्र अपना सिर हिला दिया।

परिचय के पश्चात् श्री भोलेश्वर नारायण की ओर इशारा से कलम की माँग की। कलम दी गई और उन्होंने लिखा-

''जिस पथ को गह, पिता पितामह परमगति को पाई है।
उस पथ को तू गह रे मूरख इसमें परम भलाई है।।''

और नीचे अपना हस्ताक्षर कर दिये, ऐसे थे हमारे रघुवीर बाबू। मैं उनके प्रत्युपन्नमतित्व का कायल हूँ। वे बराबर मेरे लिए चिरस्मरणीय एवं प्रेरणादायक हैं। ◆

www.bhojpurisahityangan.com

इतिहास के पन्नों में नयागाँव

□ अशोक कश्यप

नयागाँव का नाम सुनकर आप ऐसा न समझे कि गंगा के कटाव में कटकर कोई गाँव नई जगह पर बस गया है, जिस कारण वह 'नयागाँव' के नाम से जाना जाता है।

हालाँकि यह भी सच है कि पुराने जमाने में जहाँ आज-कल नयागाँव बसा हुआ है, जंगल ही जंगल था। नये बसने वालों ने जंगल को साफ कर नयागाँव बसाया और वह 'नयागाँव' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

'नयागाँव के बगल में ही कसमर एक बस्ती है जो वर्तमान पहलेजा घाट रेलवें स्टेशन के बगल में है। पठान शासन के समय कसमर एक परगना था, जहाँ न्यायकर्ता काजी तथा प्रशासन के दूसरे पदाधिकारी रहते थे। आज भी कसमर एक परगना है और पुराने काजी खान्दान के लोग बसे हुए हैं। इसके आसपास की भूमि चकों में बँटी हुई थी। जैसे इस्माइलचक, कपूरचक, महमदअलीचक, महमूदचक, मुर्गियाचक, मुस्तफाचक, कस्तूरीचक और लहलादचक आदि।

इन्हीं चकों के आसपास नये-नये गाँव बस गये। जैसे- रहिमपुर, वाजिदपुर, हसनपुर, रसूलपुर, हासिलपुर और राजापुर आदि।

इन आबाद पुरों और चकों के बीच में गैर आबाद जमीन थी जिसमें जंगल ही जंगल थे। इन्हीं जंगलों में से एक को साफ कर नये बसने वालो ने नयी बस्ती बसायी जिसको हम 'नयागाँव' के नाम से जानते हैं।

नयागाँव के पड़ोस में मकरा एक बस्ती है। पुराने समय में यहाँ एक मस्जिद थी। जहाँ एक ईमाम साहब रहते थे। इस गाँव के नाम के सम्बंध में एक किम्वदन्ती मशहूर है। जो इस प्रकार है :

एक हजयात्री यात्रा के दौरान एक रात यहाँ मस्जिद में ठहर गया। इमाम ने उससे पूछा कि तुम कहाँ जा रहे हो ? उस मुसाफिर ने कहा कि -'मैं हज करने मक्का जा रहा हूँ।' इस पर उस इमाम ने कहा-''अगर मैं तुमको मक्का का दर्शन यहीं करा दूँ तो कैसा रहेगा ?'' उस मुसाफिर ने जवाब दिया कि 'फिर मुझे मक्का जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।' इमाम ने उसे अपनी आँख बन्द करने को कहा और फिर थोड़ी देर में पूछा- ''तुमने मक्केरा दीदम'' उस मुसाफिर ने कहा- ''हाँ मैंने मक्केरा दीदम।'' उसके बाद से मक्केरा दीदम की जगह वह स्थान मकरा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। मक्केरा दीदम का माने होता है : 'मैंने मक्के को देखा।'

नयागाँव के उत्तर में हरदियाँ चौर पड़ता है। जहाँ पिपरा मठ, चिलावें मठ और ककड़ा मठ मशहूर हैं। पुराने समय में ये सब मठ बौद्धमठ थे। आज भी यहाँ के पुराने कुओं में बुद्धकाल के सिक्के मिलते रहते हैं। इन मठों के संन्यासी बौद्ध धर्म को मानते हुए गृहस्थ-आश्रम में चले गये थे। बाद में ये लोग वैष्णव-धर्म को मानने लगे।

इन मठों में पहुँचने के लिए बरसात के समय नाव के सिवाय दूसरा कोई साधन नहीं है। अन्य समय में पैदल चल कर ही यहाँ पहुँचा जा सकता है।

सन् 1933 ई० में 'बटोहिया' के गायक श्री रघुवीर नारायण को चिलावें मठ के एक पुराने कुएँ से कुछ सिक्के मिले थे। उनका कहना था कि यह खोज की वस्तु है। और भी बौद्ध-कालीन सामान यहाँ मिल सकते हैं। बांकारो इस्पात कारखाने के मशहूर मजदूरनेता श्री विद्या सागर गिरि इन्हीं मठो में से एक ककड़ा मठ के निवासी हैं।

सोनपुर से दस किलोमीटर पश्चिम नयागाँव स्थित है। सोनपुर-छपरा मुख्य सड़क के बगल में नयागाँव रेलवे स्टेशन है। नयागाँव में डाकघर, तारघर, टेलीफोन ऑफिस, विद्युत ऑफिस, सरकारी अस्पताल, थाना, गोगल सिंह इन्टर कॉलेज, राधिका प्रसाद मध्य विद्यालय, शहीद राजेन्द्र पुस्तकालय और रघुवीर नारायण पुस्तकालय मौजूद हैं। मवेशी अस्पताल के अलावे स्टेट बैंक भी कार्यरत है। नयागाँव को शहीद राजेन्द्र सिंह की जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है।

भोजपुरी राष्ट्रीय गीत के रचयिता श्री रघुवीर नारायण की जन्मभूमि होने के कारण नयागाँव एक साहित्यिक तीर्थ स्थान हो गया है।

श्री रघुवीर नारायण के छोटे भाई डॉ० श्रीवासुदेव नारायण किसी समय पटना विश्वविद्यालय के उप-कुलपति थे। श्री रघुवीर नारायण के छोटे लड़के श्री हरेन्द्रदेव नारायण द्वारा रचित 'वीर कुँवर सिंह' भोजपुरी साहित्य का महाकाव्य माना जाता है।

श्री हरेन्द्रदेव ने सन् 1935 में नयागाँव में छात्र-संघ की स्थापना की थी जिसके मंत्री स्वतंत्रता सेनानी श्री भिखारी नाथ थे। इन्होंने सन् 1936 में सोनपुर सेमिनरी में छात्र-संघ की स्थापना की जिसके मंत्री पूर्व एम०एल०सी श्री जयमंगल सिंह और अध्यक्ष श्री भिखारी नाथ बनाये गये। इन लोगों ने 'छात्र-सेवक' नामक पत्रिका भी निकाली थी।

किसी जमाने में बेतिया राज के दीवान नयागाँव के ही श्री झब्बूलालजी थे। नयागाँव में इनका महल था जो देखने

www.bhojpurisahityangan.com

लायक था। पर सन् 1934 के भूकम्प में वह पूर्ण रूप से धराशायी हो गया। वह अब सिर्फ खण्डहर के रूप में पड़ा हुआ है। स्वतंत्रता सेनानी रंगबाबू उसी खान्दान के थे जो बाद में आज शहर में जा बसे। उसी परिवार के दूसरे सदस्य डा. सुरेश प्रसाद पटना में बस गये हैं।

अम्बिका भवानी मंदिर की दीवार में जड़े स्मार-पत्थर से पता चलता है कि नयागाँव के श्री धर्मनाथ सहाय ने अपने पिता श्री हरिहर प्रसाद की यादगारी में अम्बिका भवानी के मंदिर का निर्माण कराया। जहाँ आज भी साड़ी और मुकुट सब से पहले इनके खान्दान के द्वारा चढ़ता है। श्री धर्मनाथ सहाय बाबू बद्रीनारायण के पिता थे। नयागांव में इनके मकान में आजकल डाक-तार घर खुला हुआ है।

कहा जाता है कि हरिहरनाथ मन्दिर सोंनपुर में कार्तिक पूर्णिमा को पहला झण्डा का संकल्प नयागाँव के ही किसी नागरिक से कराया जाता है। यह एक ऐतिहासिक खोज का विषय है।

नयागाँव के ही बाबू सूरजा प्रसाद भागलपुर शहर में जा बसे है। इनके लड़के तारकेश्वर प्रसाद नयागाँव बराबर आया करते थे। नयागाँव के सरकारी अस्पताल को इनके ही पूर्वज के एक सदस्य श्री रास बिहारी सहाय ने बनवाया था।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी पोती को नयागाँव के इस परिवार का एक सदस्य बना कर जीरादेई और नयागाँव दोनों को गौरव प्रदान किया है।

नयागाँव के श्री धुरन्धर प्रसाद हाजीपुर में वकालत करते थे। उनके भतीजा श्री कमला प्रसाद भी वहीं वकालत करते थे। वे लोग वहीं के निवासी हो गये गंगा के कटाव के चलते उन का नयागाँव का मकान गंगा की धार में बह गया। नयागाँव सरकारी अस्पताल के हाते में मरीजों के लिए श्री धुरन्धर प्रसाद ने वार्ड बनवाया जिसमें आज भी मरीज रह कर दवा कराते हैं।

अपने जमाने में नयागाँव के निवासी श्री गधिका प्रसाद जिला शिक्षा निरीक्षक थे जबकि तीनों जिला गोपालगंज, सिवान और सारण तब एक जिला सारण था। उस समय मध्य विद्यालय में फीस लगती थी। यही वह व्यक्ति हैं जिन्होंने सरकार से संघर्ष कर पूरे सारण जिला के मध्य विद्यालयों में मुफ्त शिक्षा जारी करवायी।

नयागाँव का राधिका मध्य विद्यालय उनकी याद की निशानी है। इनके लड़के भी रामचन्द्र प्रसाद इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक रहकर गुजर गये।

किसी समय नयागाँव की पुरानी मस्जिद, मकरा गाँव में महीनदी के किनारे खड़ी थी। जहां सोमवार और वृहस्पतिवार को बाजार लगता था। उस मस्जिद के आँगन में पीर साहब का एक मकबरा था। जहाँ हर साल उर्स मेले के वक्त उन पर चादर चढ़ता था। मस्जित के बाहर कब्रगाह थी जहाँ बाजार लगता था। यहाँ पर इलाके के ताजिये और सीपर जुटते थे। दशहरे के मौके पर इलाके की दुर्गा मूर्त्तियों का सामुहिक प्रदर्शन होता था। यहाँ के हिन्दू और मुसलमान भाई-भाई के प्रेम में आज ही जैसे बँधे हुए थे। दुर्गा और ताजिया के जूलूसों में एक साथ खेलत-कूदते थे। आपस की यह एकता नयागाँव के सांस्कृतिक इतिहास की देन के रूप में आज भी कायम है।

गंगा के कटाव के कारण पुरानी मस्जिद और कुछ मन्दिर अब नहीं रहे। नई मस्जिद नयागाँव स्टेशन के पास मुख्य सड़क पर बन गयी है। पीर साहब का मजार शहीद राजेन्द्र नगर बहेरा गद्दी में बन गया है। जहाँ अब उर्स का मेला लगता है।

पुराने मन्दिरों में पत्थर के मंदिर मकरा में बच गया है। जो राष्ट्रीय आन्दोलन के समय स्वतंत्रता सेनानियों का आश्रम भी था।

पुराने विशाल मंदिर के बदले में नया मंदिर श्री रघुवीर नारायण के घर के बगल में उनके ही परिवार के डॉ० धनंजय प्रसाद ने खड़ा कर दिया है।

दीवान झब्बूलाल और बाबू राम जी सहाय की ठाकुरवारी आज भी याद के रूप में मौजूद है।

पुराने समय का वह दिन अब सिर्फ याद भर रह गया है। सावन माह में प्रत्येक सोमवार को इलाके के नामी-गिरामी तबला-वादक, सितार, सारंगी और ढोलक के बजवैये जुटते थे। सितार-वादक निल्लू ओझा, तबला-वादक सूर इनायत मियाँ, बुजुर्ग इदन मियाँ मरई हजरा, उस्ताद नरसिंह सिंह और सरयू सिंह अब नहीं रहे। श्री वैद्यनाथ प्रसाद इनकी धरोहर के रूप में जरूर नयागाँव का नाम उजागर कर रहे हैं।

हारमोनियम मास्टर श्री सूपन गोस्वामी अब नहीं रहे। मीठे स्वर के गायक तथा नयागाँव के नाट्य समिति के स्तम्भ श्री कमलेश्वरी प्रसाद उर्फ बच्चू बाबू अब नहीं रहे; पर उनके पुत्र श्री अशोक जी जरूर दशहरे के मौके पर मौजूद होकर उनकी याद करा जाते हैं। बच्चू बाबू के एक सहयोगी श्री सरयू प्रसाद आज भी जीवित हैं।

समाजसेवी सेठ सूर्य साह और नयागाँव में आर्य समाज के संस्थापक स्वतंत्रता सेनानी डॉ० महाराज सिंह भुलाये नहीं जा सकते।

नयागाँव में किसी तरह के सांस्कृतिक काम को सफल बनाने में सेठ जी तन, मन और धन से लग जाते थे, उनके छोटे लड़के भी वैद्यनाथ प्रसाद उनकी सांस्कृतिक देन हैं।

नयागाँव में रामलीला के संस्थापक श्री सच्चिदानन्द

www.bhojpurisahityangan.com

ओझा, श्री शंकर तिवारी, नारद और विश्वामित्र के पात्र श्री चक्रधर तिवारी और परशुराम के पात्र श्री शिव शरण पाण्डेय आज भी याद किये जाते हैं।

ऐसे तो 20वीं सदी के शुरू में ही नयागाँव के रघुवीर नारायण राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रभावित हो चुके थे, इसकी झलक हमें उस काल में रचित उनकी रचना 'भारत भवानी' में मिलती है-

''तेरे पुत्र वेद भाखे
नम होके हाँके रथ
तेरी आज शक्ति क्यो थिरानी मेरी जननीव''

पर राष्ट्रीय आन्दोलन का सक्रिय असर नयागाँव पर सन 1921 से बहुत अधिक रहा। सन् 1921 में पढ़ाई छोड़ कर सक्रिय राजनीति में कूद पड़ने वालों में नयागाँव के स्वतंत्रता सेनानी रंगबाबू और स्वतंत्रता सेनानी ब्रह्मदेव पाठक उर्फ गाँधी जी का नाम आता है।

रंगबाबू आरा में जा बसे थे। और विद्यार्थी-जीवन छोड़कर श्री ब्रह्मदेव पाठक नयागाँव में रहने लगे थे।

सन् 1930 और 1931 के समय तो नयागाँव असहयोग आंदोलन का एक केन्द्र हो गया था। बाबा कृपाल दास के प्रभाव में यहाँ दर्जनों कार्यकर्त्ता तैयार हो गये थे।

उस समय का तरुण संघ अपने ढंग का क्रांतिकारी-काल संघ था। ताड़ी-दारू की दूकान पर धरना देना, नमक की पुड़िया बनाकर स्टेशन और बाजार में बेचना, साथ ही आश्रम-वासियों के लिए घर-घर से मुठिया बटोर कर लाना इस तरूण संघ के सदस्यों का प्रधान कर्तव्य हो गया था।

इस मौके पर संस्कृत पाठशाला के पंडित श्री देवनारायण चौबे और राधिका मध्य विद्यालय के शिक्षक श्री राधा सिंह का नाम भुलाये नहीं भूलता। राष्ट्रीय भावना से नवयुवकों को सुसज्जित करने में इन दोनों का काफी हाथ रहा।

असहयोग आंदोलन के समय नयागाँव केन्द्र के नायक के रूप में एक के बाद एक श्री महाराज सिंह रसेनचक, श्री भरत सिंह डुमरी बुजुर्ग और भ्र कमलेश्वरी प्रसाद उर्फ बच्चू बाबू नयागाँव जिम्मेदारी निभाते रहे।

छुआ-छूत मिटाने के आन्दोलन में नयागाँव हमेशा आगे रहा। हरिजन उद्धार के लिए गाँधी जी द्वारा की गई भूख हड़ताल में एक रोज भूख हड़ताल कर यहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने उनका सहयोग किया। गाँधी की उस भूख हड़ताल की सफलता की देन पूना पैक्ट है।

हरिजनों के लिए मन्दिर खोलने के आंदोलन में श्री हृषीकेश नारायण का नाम आज भी श्रद्धा से लिया जाता है। उन्होंने अपने पत्थर-मन्दिर को हरिजनों के लिए खोल दिया था। उनका साथ देने वालों में नयागाँव पंचायत राज के प्रथम मुखिया श्री भिखारी नाथ, सरपंच श्री परमेश्वर पाठक, हरिजन समाज-सेवक के कार्यकर्त्ता श्री रामछबिला गुप्ता, सेठ सूर्य साह, डॉ० महाराज सिंह, श्री ब्रह्मदेव पाठक और डुमरी बुजुर्ग के रामचन्द्र सिंह उर्फ गाँधी जी का नाम याद किया जाता है।

प्रान्तीय स्वराज्य मिलने पर सन् 1937 के चुनाव में श्री सुखराम पाठक का योगदान नयागाँव में सराहनीय रहा। उस समय कांग्रेस के उम्मीदवार पं० द्वारकानाथ तिवारी थे। सोनपुर थाना कांग्रेस के मंत्री कम्युनिस्ट नेता श्री शिव बचन सिंह थे। कांग्रेस चुनाव औफिस नयागाँव में भी भिखारीनाथ थे। प्रचारक में सेठ सूर्य साह, डॉ० महाराज सिंह, श्री गया दत्त पाठक और लाड़नपुर के श्री चन्द्रिका तिवारी जैसे लोग थे। उस समय कांग्रेस की जीत देशभक्ति की जीत समझी जाती थी क्योंकि उस समय सभी देशभक्तों का सिर्फ एक मंच कांग्रेस संस्था थी।

फिर आया सन् 1942 का अगस्त आंदोलन। गाँधी जी के 'करो या मरो' के नारे पर नयागाँव के लोगों ने भी आगे बढ़ कर भाग लिया। विद्यार्थी नेता श्री भिखारी नाथ जेल भेज दिये गये। डॉ० महाराज सिंह गोरों की गोली से घायल हो गये।

सामाजिक और सांस्कृतिक उत्थान के लिए नयागाँव के बाबू रामजी सहाय का नाम प्रथम इसलिए आता है कि उन्होंने ही सबसे पहले संस्था खोलने के लिए अपनी बहुमूल्य जमीन दान देकर लोगों को प्रोत्साहित किया था।

नयागाँव का प्राथमिक विद्यालय, राधिका मध्य विद्यालय, नयागाँव सरकारी अस्पताल उनके द्वारा दी गयी जमीन पर ही निर्मित है।

उनके बाद पं० सुख पाठक का नाम आता है जिन्होंने उच्च विद्यालय की स्थापना के लिए अपनी बहुमूल्य जमीन देने की अगुवानी की थी। आजकल गोगल सिंह इन्टर कॉलेज इसी जमीन पर चल रहा है।

भूतपूर्व नयागाँव उच्च विद्यालय की स्थापना में डॉ० वासुदेव नारायण व उप-कुलपति पटना विश्वविद्यालय का विशेष सहयोग रहा। स्वतंत्रता सेनानी श्री रामनाथ सिंह का अथक परिश्रम इस उच्च विद्यालय के लिए बहुत ही सराहनीय रहा है।

इस विद्यालय में दो-दो भूतपूर्व मुख्यमंत्री बिहार सरकार श्री राम सुन्दर दास और श्री दारोगा प्र० राय की सेवा शिक्षक की हैसियत से काफी सराहनीय रही है।

नयागाँव के स्वतंत्रता सेनानी श्री जगदीश सिंह जो एम० एल० सी० भी रह चुके हैं, आजकल सिताब दियारा में जय प्रकाश आश्रम में रह रहे हैं।

(सौजन्यः भिखारी नाथ)

www.bhojpurisahityangan.com

भोजपुरी के अमर कवि रघुवीर नारायण

□ जगदीश सिंह

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। उर्दू, फारसी की शिक्षा इनके पिताजी उन्हें स्वयं देते थे। मैट्रिक की परीक्षा इन्होंने जिला स्कूल, छपरा से पास की। उच्च शिक्षा के लिए इनका नामांकन पटना कॉलेज में हुआ। अस्वस्थ हो जाने के कारण इनकी बी०ए० की पढ़ाई वहाँ पूरी नहीं हो सकी। कॉलेज जीवन से इनकी अंग्रेजी की कविताएँ प्रारम्भ हो गई। किसी भारतीय के लिए अंग्रेजी की कविता में निपुणता एवं यश प्राप्त करना असंभव है, ऐसी टीका टिप्पणी सुनकर वे निराश नहीं हुए बल्कि चुनौती के रूप में उन्होंने स्वीकार किया। उनका एक खण्ड काव्य "ए टेल ऑफ विहार" वर्ष 1905 में प्रकाशित हुआ जिसकी प्रशंसा में इंगलैण्ड के तत्कालीन राज कवि अल्फ्रेड ऑस्टीन ने लिखा "अंग्रेजी साहित्य में आप का ज्ञान पूर्ण है। मैंने अपने देश के साहित्यकारों से अनेक कविताएँ प्राप्त की हैं पर भावनाओं की अभिव्यक्ति में आप की बराबरी कोई नहीं कर सका है।

कॉलेज छोड़कर अस्वस्थता के कारण घर पर ही रहने लगे। घर पर रहने की अवधि में अंग्रेजी में उनके दो कविता संग्रह क्रमशः "वे साइड बलासम्" एवं "सीता हरण" प्रकाशित हुए। स्वास्थ्य कुछ अच्छा हुआ तो पटना से कानून की पढ़ाई उन्होंने पूरी की। वकालत न कर उन्होंने मुंगेर जिला स्कूल में शिक्षक पद पर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। कुछ दिनों के बाद मुंगेर जिला स्कूल छोड़कर वे छपरा जिला स्कूल में चले आए। छपरा के जीवन काल में ही वर्ष 1911 में अमर राष्ट्रीय गीत "बटोहिया" की रचना उन्होंने की। इस गीत के पहले कोई दूसरी राष्ट्रीय गीत की रचना नहीं हुई थी। हाँ उसी समय सर इकबाल का "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा" गीत प्रकाशित हुआ था। भोजपुरी भाषी क्षेत्रों में राष्ट्रीय भावनाओं को जगाने मे 'बटोहिया' गीत की बहुत बड़ी भूमिका रही। वर्ष 1912 में 'बटोहिया' गीत से प्रभावित होकर राजेन्द्र बाबू ने बंगला भाषा में लिखा गया "आमार जन्मभूमि" से तुलना करते हुए हिन्दी भाषा में भी गीत लिखने के लिए रघुवीर बाबू से अनुरोध किया। उनके अनुरोध को पूरा करने के लिए रघुवीर बाबू ने हिन्दी में "भारत भवानी" गीत की रचना की। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों में राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने हेतु उपर्युक्त दोनों गीतों के अतिरिक्त और भी कई रचनाएँ उन्होंने की।

"बटोहिया" गीत अपनी लोकप्रियता के बदौलत भारत की सीमा से बाहर मारिशस, फिजी, ट्रीनीनाड, गायना आदि देशों में भी अलख जगाने में लोकप्रिय हुआ।

रघुवीर नारायण जी अंग्रेजी के अतिरिक्त भोजपुरी, हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत आदि भाषाओं में भी बहुत सारी कविताओं की रचनाएँ की। विद्वानों की राय है कि उपर्युक्त सभी भाषाओं पर समान रूप से उनका अधिकार था।

बिहार में बनैली राज के राजा श्री कृत्यानन्द सिंह एक सहृदय एवं साहित्य प्रेमी व्यक्ति थे। रघुवीर बाबू की विद्वता एवं आदर्शों से प्रभावित होकर अपने प्राइवेट सेक्रेटरी के पद पर उनको बुला लिया। रघुवीर बाबू छपरा जिला छोड़कर साहित्य की सेवा करने बनैली चले गए। रघुवीर बाबू के मानवीय दृष्टिकोणों एवं प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व से बहुत प्रसन्न हुए। बनैली राज में रहते हुए वहाँ से उनके दो कविता संग्रह क्रमशः "रघुवीर पत्र पुष्प" एवं "रघुवीर रंगरस" प्रकाशित हुए। 'रघुवीर पत्र पुष्प' कविता संग्रह धर्म, भगवत भक्ति एवं उपासना से संबन्धित है। रघुवीर बाबू एक धार्मिक एवं आध्यात्मिक चित्र के व्यक्ति थे। गाँव-गवई की भाषा में बहुत से कीर्त्तन, भजन आरती, खेमटा आदि की रचनायें की

व्यवहारिक जीवन में हर तपके के लोगों से बड़े ही सरल एवं सहज भाव से मिलते थे। आध्यात्म को आदर्शों के अनुरुप ही उनका आचरण होता था आमलोगों के लिए उनका व्यक्तित्व बहुत ही प्रेरक एवं अनुकरणीय रहा है। परोपकार उनके जीवन का लक्ष्य बन गया था।

बनैली राज की सेवा से मुक्त होकर वहीं पर वर्ष 1934-40 तक दातव्य औषधालय में चिकित्सा एवं दवा वितरण का कार्य किया। होमियो पौथी चिकितसा की शिक्षा उन्हें पहले से ही प्राप्त थी?। बड़े ही मनोयोग एवं सेवा भाव से उन्होंने इस कार्य को सफल अंजाम दिया।

वर्ष 1940 को बाद से एक पूर्ण सन्यासी की तरह वे जीवन यापन करने लगे। जिन्दगी के अन्तिम चरण में दमा रोग से पीड़ित हो गये थे। इस मनीषी को सरकारी सहायता भी नहीं प्राप्त हो सकी। कुछ साहित्यकार लोगों ने सरकार से साहित्यिक पेंशन के लिए अनुरोध की प्रक्रिया प्रारम्भ की थी लेकिन इसी बीच 1 जनवरी' 1954 को उनका देहान्त हो गया। ◆

www.bhojpurisahityangan.com

प्रतिवेदन

रघुवीर नारायण सेवा संस्थान

रघुवीर नारायण सेवा संस्थान, नया गाँव, सारण की स्थापना 1ली जनवरी 2000 को की गई। इसकी कार्यकारिणी के सदस्यों एवं पदाधिकारियों के नाम निम्नांकित हैं:-

संरक्षक - प्रो० (डा०) प्रभुनाथ सिंह

श्री प्रेम शरण आई०एफ०एस०

श्री फनीश सिंह, अधिवक्ता

श्री सत्यनारायण सिंह, एकौना कोठी, शास्त्रीनगर

अध्यक्ष - श्री जयमंगल सिंह, पूर्व पार्षद

उपाध्यक्ष - श्री भिखारी नाथ, स्व० सेनानी

महामंत्री - डा० श्री रामशोभित सिंह

मंत्री - (1) पं० श्री सुदामा मिश्र 'कवि'

(2) जगदीश सिंह

कोषाध्यक्ष - श्री तारकेश्वर राम

सदस्य - श्री प्रताप नारायण

श्री सत्यदेव प्र० चौरसिया

श्री श्यामदेव प्रसाद

श्री पाण्डेय कपिल

श्री नागेन्द्र प्र० सिंह

श्री रघुवीर नारायण सेवा संस्थान के अन्य सहयोगी संस्थाओं जैसे रघुवीर नारायण कला मंच, रघुवीर नारायण स्मारक समिति तथा रघुवीर नारायण पुस्तकालय के अध्यक्ष एवं सचिव, मंत्री पदेन सदस्य होंगे।

रघुवीर नारायण स्मारक समिति

नया गाँव के ग्रामीणों की ओर से रघुवीर नारायण स्मारक समिति की भी स्थापना वर्ष 1999 में की गई। इसके लिए गठित कार्यकारिणी के सदस्यों के नाम निम्नलिखित हैं।

1. अध्यक्ष - 1. श्री भिखरी नाथ - स्व० सेनानी

2. उपाध्यक्ष - (क) श्री सत्य नारायण साह

(ख) श्री मिश्री लाल राम

3. महासचिव - श्री रमेश चन्द्र ओझा।

सचिव मंडल -

(1) श्री रवि पाठक

(2) श्री वैद्यनाथ प्र० गुप्ता

(3) श्री दशरथ साह

(4) श्री अर्पणा देवी

(5) श्री अशोक राम

कोषाध्यक्ष - श्री तारकेश्वर राम

अंकेक्षक - श्री अवधेन्द्र भूषण सिन्हा (बन्टी जी)

कार्यक्रम :- रघुवीर नारायण स्मारक की स्थापना सोनपुर-छपरा उच्च पथ पर हरिजन महल्ला के सामने करवाना।

(2) मस्जिद चौक से भीतर नया गाँव में रघुवीर पथ हासिलपुर चौक तक बनवाना।

(3) साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम करना।

रघुवीर नारायण कला मंच

भोजपुरी गीत बटोहिया के अमर रचयिता नयागाँव भूमि के सपुत्र बहुभाषाविद् रघुवीर नारायण जी का जन्म 30 अक्टूबर 1884 को हुआ था। उनकी स्मृति में उनकी रचनाओं तथा कृत्यों को जन जीवन से जोड़ने हेतु "रघुवीर नारायण कला मंच नयागाँव (सारण)" की स्थापना वर्ष 1991 में नयागाँव निवासी श्री भिखारी नाथ, स्वतंत्रता सेनानी एवं लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम में मंत्री 'श्री रामदास 'राही' के सतत् प्रयास से संभव हो सका। कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में :-

श्री भिखारी नाथ, श्री जगदीश सिंह, प्रो० रामनाथ राय, श्री दहाउर प्रसाद राय, श्री रामदास 'राही', चंदेश्वर प्र० राय, तारकेश्वर राम, मो० असलम, रमेश राय का चुनाव किया गया। संरक्षक के रूप में:- श्री जयमंगल सिंह (पूर्व एम०एल०सी०), स्व० राम जयपाल सिंह (पूर्व मंत्री बिहार सरकार) एवं राज कुमार राय (पूर्व विधायक) का चुनाव हुआ।

पदाधिकारीगण :-

(1) श्री जगदीश सिंह - अध्यक्ष

(2) प्रो० रामनाथ राय - सचिव

(3) श्री चंदेश्वर प्रसाद राय- उप सचिव

कम समय एवं कम साधन से रघुवीर नारायण की 107 वीं जयंती "रघुवीर नारायण कला मंच" के तत्वाधान में मध्य विद्यालय नयागाँव के प्रांगण में मनाई गई। जिसमें निम्नांकित हिन्दी और भोजपुरी के ख्याति प्राप्त विद्वान्, साहित्कार, कवि,

www.bhojpurisahityangan.com

रचनाकार सम्मिलित हुए। इस समारोह के स्वागताध्यक्ष श्री जयमंगल सिंह (पूर्व एम० एल० सी०) थे। श्री नागेन्द्र प्र० सिंह, पाण्डेय कपिल, श्री अर्जुन कुमार 'अशांत' रघुवीर बाबू की वहु प्रकाशवती नारायण, पौत्र प्रताप नारायण, बैकुण्ठ जी, जमादार भाई, ब्रजकिशोर दुबे सरीखे व्यक्तियों ने भाग लिया।

इस मंच के तत्वाधान में खेलकूद का भी आयोजन श्री दहाउर प्रसाद राय के नेतृत्व में किया गया। पुरस्कार वितरण श्री रामजयपाल सिंह के कर-कमलो द्वारा संम्पन्न हुआ। इस आयोजन को सफल बनाने में नवयुवक दल के उत्साही सदस्यों को सक्रिय सहयोग सराहनीय रहा।

रघुवीर नारायण के गाँव की घरती पर उनकी एक प्रतिमा स्थापित की जाय तथा एक साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था को स्थापित कर संचालित किया जाय ऐसा संकल्प है। साथ ही नयागाँव क्षेत्र के प्रवुद्ध एवं संवेदनशील लोगों से इस दायित्व के निर्वाह की अपेक्षा की जा रही है।

आदरणीय श्री नागेन्द्र प्र० सिंह के निर्देशन में रघुवीर नारायण कला मंच की नियमावली तैयार कर कला मंच की आम वैठक से पारित की गई है।

रघुवीर नारायण पुस्तकालय

पुस्तकालय के उद्घाटन से पूर्व उसमें आवश्यक सामग्री जुटाने में पूरे उत्साह से और लगने के साथ कार्यक्रम बनाए गए। इस दिशा में श्री जयमंगल प्र० यादवेश ने उपस्कर के मद में सर्वप्रथम दान देकर हमारे मंच के सदस्यों के उत्साह को बढ़ाया जिसके लिए हम उनके आभारी हैं। श्री वीरेन्द्र नाथ पाठक उपस्कर एवं पुस्तकें दान में देकर प्रोत्साहित किया। पांडेय कपिल ने भोजपुरी की इक्यावन पुस्तकें दान स्वरूप देकर पुस्तक संग्रह अभियान का श्री गणेश किया जिसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। और भी लोगों से पुस्तकें प्राप्त हुई जिसकी सूची इस प्रकार है।

श्रीमती प्रकाशवती नारायण, प्रेम शरण, डा० राम शोभित प्र० सिंह, श्री सत्यदेव चौरसिया, श्यामदेव प्रसाद, प्रो० रामनाथ राय, चंदेश्वर प्रसाद राय, राजदेव पंडित, श्री वीरेन्द्र कुमार चौरसिया आदि।

आज जबकि मानवीय मूल्यों का तेजी से ह्रास होता जा रहा है और शिक्षा के प्रति सजगता का भाव लुप्त-सा होता जा रहा है, पुस्तकालय जैसी स्वयं सेवी संस्था की स्थापना तथा संचालन में उपस्थित होने वाली कठिनाईयों का आप सहज अंदाजा लगा सकते हैं। फिर भी हम इस संस्था से जुड़े प्रेमी लोगों की मदद से इस पुस्तकालय की अद्यतन स्थिति इस प्रकार है।

(क) पुस्तकालय की सदस्य संख्या : 428

(ख) पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या : 1005

(ग) पुस्तकालय में उपस्कर :-

कुर्सी : 6
बेंच : 2
टेबल : 2
अलमीरा : 3

रघुवीर नारायण पुस्तकालय को विशेषत: भोजपुरी पुस्तकालय के रूप में विकसित करने, रघुवीर बाबू की रचनाओं को संग्रह करने साथ ही अन्य भोजपुरी दुर्लभ ग्रंथों को संग्रह करने का लक्ष्य रखा गया है। सेवा संस्थान तथा कला मंच की भी आकांक्षा है कि भोजपुरी के संदर्भ ग्रंथों को भी यह पुस्तकालय उपलब्ध करावे। तत्काल यह पुस्तकालयाध्यक्ष ग्राम पंचायत भवन में संचालित है। इसे अपनी भूमि और भवन चाहिए। पुस्तकालय के स्थान पर वीरेन्द्र कुमार चौरसिया कार्यरत हैं। भूमी प्राप्त करने की दिशा में प्रयास किया गया है। निकट भविष्य में भूमि उपलब्ध हो जाने की संभावना है। यह पुस्तकालय सारण जिला पुस्तकालय संघ के नियमानुसार संवद्ध हो चुका है। यह प्रसन्नता की बात है कि डा० राम शोभित बाबू (पुस्तकालयाध्यक्ष सिन्हा लाइब्रेरी पटना) जो शिक्षा जगत एवं समाज सेवा से आजीवन जुड़े रहे हैं, का आशीर्वाद इस पुस्तकालय को प्राप्त है। यह संस्था उनके सक्रिय सहयोग तथा मार्गदर्शन से समाज में जागरण पैदा करने में अहम् भूमिका निभा सकने में समर्थ हो सकेगा। रघुवीर नारायण कला मंच की ओर से उन सबके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने हमारे उत्साह एवं गौरव को बढ़ाया है। हमें आशा है कि भविष्य में भी आपका आशीर्वाद एवं स्नेह प्राप्त होता रहेगा।

जय हिन्द! जय भोजपुरी!

ह० जगदीश सिंह
अध्यक्ष

ह० राम नाथ राय
सचिव

www.bhojpurisahityangan.com

गीत

□ सत्यनारायण सिंह

लोग मिलते रहल आ बिछुड़ते रहल
रास्ता भर रहल ना केहू हम सफर
काँट कुशन में आगे चलले आ बढ़ल
आँवन में कटल जिन्दगी के सफर
आजतक ले पहेली रहल जिन्दगी
लोग कोशिश कइल राज पा न सकल
गीत लिखनी बहुत हम दरद से भरल
बस डुबल लोर में बिन गवाए रहल
फूल खिलते रहल अवरू, झरते रहल
बगिया न रोअल बाकि एको पहल
घाम में देह बनके पसीना बहल
का कहीं आज ले छांह छलते रहल
अँधियन में हलुक मन उड़ल आ गिरल
पांव रूकल तबहियो ना चलते रहल
रात ढलते रहल दिन निकलते रहल
ना रूकल ना रूकी जिन्दगी के सफर
जेकरा चहनी ऊ तऽ मिल न सकल
जे मिलल ओकरा चहनी न कबो
जीअनी हम पत्थर राख के दिल पर
छोड़नी ना बदल राह में हम तबो
मीठ बोली बदे जी तरसते रहल
बात करकस सुने के मिलल हर पहर

शुभ कामनाओं के साथ:-

माँ विन्ध्यवासिनी स्वीट हाउस

नया गाँव बाजार

www.bhojpurisahityangan.com

बाबू रघुवीर नारायण

जन्म तिथि : 30 अक्तूबर 1884

पुण्य तिथि : 1 जनवरी 1954 (छपरा)

शिक्षा : प्रारंभिक शिक्षा जिला स्कूल छपरा।
तत्पश्चात् पटना कॉलेज में अध्ययन
मुपफ्फरपुर में वर्ष 1948 में

कार्यकलाप : बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन की अध्यक्षता।
बनैली के राजा कीर्त्यानन्द सिंह के निजी सचिव कई वर्षों तक।
वर्ष 1952-53 में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना द्वारा वयोवृद्ध साहित्यकार सम्मान।

अंग्रेजी कृतियाँ : (1) ए टेल ऑफ बिहार (1905),
(2) वेसाइड ब्लासम्स (1929),
(3) लव एण्ड वार,
(4) दि व्हील ऑफ टाइम
(5) विक्असे रिटर्न
(6) सीताहरण (1929)
(7) फोक टेल्स ऑफ बिहार (अंग्रेजी गद्य पुस्तक)

हिन्दी : (1) रमा (हिन्दी खण्ड काव्य, 1911),
(2) रघुवीर रस-रंग
(3) निकुंज कलाप
(4) रघुवीर रसगंगा
(5) बटोहिया

इसके अतिरिक्त कलकत्ता के इस्टीच्यूट मैगजीन और यंग बिहार में अंग्रेजी कविताएं प्रकाशित हुई। 'फोगटे' 'तरूण भारत' और बिहार बन्धु, शिक्षा आदि तत्कालीन पत्र पत्रिकाओं में हिन्दी रचनाएँ प्रकाशित।

प्रकाशक : रघुवीर नारायण सेवा संस्थान, ग्राम+पो०- नयागाँव, जिला-सारण (बिहार)
मुद्रक : कॉस्मिक कम्प्यूटर्स, 06 एडीसन आर्केड, पटना-800001

सहयोग राशि- 25.00 (पच्चीस) रुपये